हिन्दी शिक्षण पद्धति

हिन्दी शिक्षण पद्धति

पाठ्यचोजना

शिक्षण एक कला है। इसमें जितनी रोचकता लाये जायेंगी शिक्षण उतना ही रोचक एवं प्रभावित बन जाएगा। किसी भी कार्य को अगर हम करना चाहते तो उस कार्य के सन्दर्भ में योजना बनाना आवश्यक है। तभी वह कार्य सफल बन जाता है। बिना योजना के कोई भी कार्य सफल नहीं बन जाता।

अध्यापन का कार्य बड़ी ईमानदारी, परिश्रम, लगन, निष्ठा एवं तैयारी का होता है। अध्यापक के लिए पाठ की तैयारी ही सबसे प्रमुख कार्य है। कोई भी शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को सरल, सरस, प्रभावी, बोधगम्य एवं क्रमगत स्वरूप देना चाहते है। उसका प्रथम कर्तव्य यह होना चाहिए कि वह अपने विषय में पाठ्यचोजना तैयार करें। ताकि उस पाठ्यचोजना के आधार पर उसका शिक्षण कार्य सरल, सरस, प्रभावी

एवं क्रमबद्ध भी बन जायेगा।

पाठ्यथोजना का अर्थ :-

सामान्यत: अपने शिक्षण कार्य में कक्षा शिक्षण करने से पूर्व पढाये जाने वाले पाठ्य की जो योजना बनाता है उसे पाठ्य योजना कहा जाता है।

पाठ्यथोजना की माध्यम से पाठ व्यवस्थित क्रम से बढ़ता है। कब, क्या, कैसे, कितने समय में प्रस्तुत करना है। इसका ज्ञान शिक्षक को पाठ्यथोजना की माध्यम से उठता है।

पाठ पढाने से पूर्व जो पाठ लिखित तैयारी की जाती है उसे पाठ्यथोजना कहते है। जिसमें अध्यापक पाठसंबन्धी मुख्य अंशों को लिखकर रखता है। और अध्यापन के वक्त उसका सही उपयोग करता है। पाठ्यथोजना अध्यापक के लिए अध्यापन के में मार्गदर्शक का काम करती है।

भटिया के अनुसार - "पाठ्यथोजना

से पता चलता है कि बच्चों ने क्या पढ़ लिया है। आगे किस दशा में उनके पद-प्रदर्शन का कार्य किया जाय और तत्काल क्या पढ़ाया जाय।"

पाठ्ययोजना की आवश्यकता

शिक्षक और छात्र दोनों ही पाठ्य-योजना से अधिकाधिक लाभान्वित हो सके। इसके लिए शिक्षण में पाठ्ययोजना परम आव-श्यक है।

पाठ्ययोजना की निम्नलिखित आवश्यकता है:-

1. पाठ्ययोजना शिक्षक के शिक्षण कार्य को नियमित, नियोजित, और व्यवस्थित करती है।
2. पाठ्ययोजना से क्या पढ़ाना है? कैसे पढ़ाना है? इन समस्त बातों से शिक्षक भली भाँति अवगत हो जाता है।
3. पाठ्ययोजना शिक्षक के शिक्षण कार्य को विकसित सीमाओं के भीतर रखकर उसके समय और शक्ति को बचाती है।

4. पाठ्ययोजना पाठ्य विषय को ~~[illegible]~~ सुसंगठित स्वरूप देकर उसके कुशल संचालन में योग देती है।

5. पाठ योजना ~~[illegible]~~ शिक्षण को अव्यवस्था और विचारहीनता से दूर रखकर उसे सफल बनाने में सहायता देती है।

6. पाठ्य योजना प्रतिदिन के कार्य, विषय सामग्री के चयन तथा शिक्षण विधियों और छात्रों की क्रियाओं की प्रसंग में शिक्षक को विचार करने के लिए बाध्य करते है।

7. पाठ्य योजना व्यवस्थित ढंग से कार्य करने के लिए कम से कम समय में अधिकाधिक छात्रों को व्यवस्थित ज्ञान देने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

8. पाठ्य योजना बना लेने से प्रत्येक बिन्दुओं को भली प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है।

पाठ्ययोजना बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. पाठ्ययोजना बनाते समय अध्यापक को पूर्व ज्ञान को ध्यान में रखना चाहिए।
2. पाठ्ययोजना बनाते समय निर्धारित समय का ध्यान रखना चाहिए।
3. पाठ्ययोजना का विकास छात्रों के सहयोग से करना चाहिए।
4. शिक्षक जिस विषय वस्तु पर पाठ्ययोजना बनाना चाहता है उसका उसे पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए।
5. अध्यापक को अपने छात्रों के रुचियों, क्षमताओं, विभिन्नताओं तथा आवश्यकताओं से अवगत होना चाहिए।
6. शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों से अवगत होना चाहिए।
7. शिक्षक को सीखने की सिद्धान्तों, शिक्षण पद्धतियों तथा शिक्षण उपकरणों का ज्ञान

होना चाहिए।

8) ~~[struck out]~~ पाठ का प्रस्तुतीकरण प्रभाव- पूर्ण होना चाहिए।

9) सहायक सामग्री का चुनाव भी प्रकरण का अनुकूल होना चाहिए।

10) पाठ्ययोजना बनाते समय प्रश्नों की योग्य रचना का ध्यान रखना चाहिए।

11) छात्रों के मानसिक स्तर का भी ध्यान में रखना परम आवश्यक है।

12) श्यामपट्ट सारांश को भी पाठ्ययोजना में स्थान देना चाहिए।

13) पाठ्ययोजना बनाते समय उद्देश्यों की ओर ध्यान देना आवश्यक बन जाता है।

14) पाठ्ययोजना में पुनरावर्ती के प्रश्नों को उचित प्रकार से स्थान दिया जाय।

15) पाठ्ययोजना के अन्त में गृहकार्य को स्थान दिया जाय।

पाठ्ययोजना का स्वरूप

1. छात्राध्यापिका का नाम (हमारा नाम)
2. विद्यालय का नाम (हम जो स्कूल में पढ़ाते है)
3. अनुक्रमांक (Roll No.)
4. कक्षा (class)
5. विषय (subject)
6. प्रकरण (Lesson)
7. इकाई (unit)
8. दिनांक (Date)
9. कालांश (period)
10. अवधि (time)

पूर्व ज्ञान :-

प्रत्येक पाठ्ययोजना में छात्रों के पूर्वज्ञान उल्लेख करना आवश्यक होता है। क्योंकि प्रस्तावना का आधार यही है, पूर्वज्ञान के अन्तर्गत केवल छात्रों के द्वारा पहले पढ़ी बातों का ही समावेश नहीं बल्कि उसका समस्त अनुभव का समावेश होता है। जो उनको पाठ्य विशेष संबन्धा

में प्राप्त होता है। छात्र किसी विशेष संबंधित किसी नयी विषयवस्तु की जानकारी प्राप्त करने से पूर्व जो कुछ जानकारी रखता है उसे उसका पूर्वज्ञान कहा जाता है। कोई भी छात्र कभी भी पूर्वज्ञान रहित नहीं हो सकता। इसके पूर्वज्ञान के लाभ उठाना शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य अंग है।

सामान्य उद्देश्य :-

प्रत्येक विषय के शिक्षण के कुछ सामान्य उद्देश्य होते है। यह उद्देश्य विषय से संबन्धित होते है। यहाँ उन उद्देश्यों को दिखाया जाता है।

विशिष्ट उद्देश्य :-

विशिष्ट उद्देश्य विषय-वस्तु से संबन्धित होता है। यह एक भी हो सकता है और एक से अधिक भी हो सकता है।

विषयवस्तु

इसमें प्रकरण का सारांश लिखा जाता है।

सहायक सामग्री

पाठ पढ़ाने के लिए शिक्षक को जिस सामग्री का प्रयोग करना चाहता है उसे यहाँ लिख दिया जाता है।
उदा: जैसे चित्र, मानचित्र, चार्ट आदि।

सहायक सामग्री के द्वारा पाठ को रोचक, आकर्षक तथा सरल बनाया जाता है। पाठ्योजना में सहायक सामग्री का स्पष्ट उल्लेख करना चाहिए।

प्रस्तावना [Introduction]

यहीं से पाठ का शिक्षण प्रारंभ होता है। कहा जाता है कि अच्छा आरंभ ही अच्छा कार्य है। इसके अनुसार नया ज्ञान या नया अनुभव प्रदान करने के लिए हम सबसे पहले छात्रों की उस

पूर्व ज्ञान या अनुभव को चेतना की केन्द्र या अनुभवों में लाना चाहिए। जो उसे नवीन ज्ञान की ओर आकर्षित कर सके।

12/8/2013 सोमवार

प्रस्तावना करने की विधियाँ (Methods)

1. पूर्व ज्ञान या पूर्व पठित पाठ्यांश पर आधारित प्रश्न पूछकर।

2. समान भाव वाली कविता, कहानी, कथासार सुनाकर।

3. सहायक सामग्री प्रदर्शित करते हुए।

4. प्रस्तुत पाठ के लेखक, उनके कार्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए।

5. प्रस्तुत पाठ से संबन्धित कोई रोचक और सजीव वर्णन सुनाते हुए।

प्रस्तावना के गुण

1. प्रस्तावना न तो अधिक लम्बी हो, न ही अधिक छोटी या अधिक जटिल हो।

2. सामान्यत: चार-पाँच मिनट के प्रस्तावना पर्याप्त है।

3. प्रस्तावना में प्रयुक्त प्रश्न रोचक (interest) एवं उत्तेजक (प्रेरणा) होना चाहिए।

4. प्रस्तावना अस्पष्ट और अनिश्चित नहीं होनी चाहिए।

5. प्रस्तावना में प्रश्नों को इस प्रकार क्रमबद्ध करना चाहिए कि एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से दूसरे प्रश्न की ओर अग्रसर हो सके और दूसरा प्रश्न तीसरे प्रश्न की ओर अग्रसर हो सके।

13/8/13 उद्देश्य कथन

प्रस्तावना के तुरन्त ~~ब~~ बाद उद्देश्य कथन आता है।

प्रस्तुतीकरण (Presentation)

संपूर्ण समस्या का केन्द्र ~~बिन्दु~~ बिन्दु पाठ में ~~का~~ प्रस्तुतीकरण या पाठ

विकास में सम्मिलित है। इसमें लिखा जाता है कि पाठ को छात्रों के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाता है।

प्रस्तुतीकरण में छात्राध्यापक क्रियायें, छात्र क्रियायें, श्यामपट्ट क्रियायें (फलक), मूल्यांकन आदि क्रियायें सम्मिलित है।

1. आदर्शवाचन
2. अनुकरण वाचन
3. काठिन्य निवारण
4. व्याकरण कार्य
5. भाषा कार्य [तथ्य संबन्धी]
6. रचना कार्य
7. मौन वाचन
8. विचार विश्लेषण

A) मौखिक अभिव्यक्ति
B) लिखित अभिव्यक्ति
c) पुनर्वाचन
d) मूल्यांकन (अर्जित ज्ञान का पता लगाना)
e) प्रयोग
f) कक्षा कार्य

(ग) गृह कार्य

14/8/2013
बुधवार

गृह कार्य

प्रत्येक पाठ के अन्त में गृह कार्य दिया जाता है। गृह कार्य देते समय प्रत्येक अध्यापक को निम्नलिखित बातों विशेष ध्यान रखना चाहिए।

16/8/2013
शुक्रवार
Important

1. अन्य विषयों के गृहकार्य ~~के~~ का ध्यान ~~से~~ रखते हुए सीमित मात्रा में ही गृहकार्य दिया जाय। जिससे है कि छात्र उसे उत्साहपूर्वक ईमानदारी तथा परिश्रम के साथ संपूर्ण कर सके।
2. गृहकार्य का मूल्यांकन आवश्य किया जाय। अन्यथा छात्र गृहकार्य की ओर उदासीन और उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण रखने लगेंगे।
3. गृहकार्य न हो अधिक और न हो बहुत कम। न अधिक आसान न अधिक कठिन हो।
4. गृहकार्य का पाठ्यवस्तु से प्रत्यक्षत: संबन्ध होना चाहिए।
5. गृहकार्य ऐसा न हो कि इससे संपूर्ण करने में छात्रों को समय तथा श्रम की दृष्टि से

अत्यधिक परेशानी हो।

6. अध्यापक डायरी में प्रत्येक छात्र का गृहकार्य संबन्धी लेखा-जोखा आवश्य रखा जाय।

7. गृहकार्य असंतोष जनक ढंग से या बिल्कुल पूरा न करने वाले छात्रों की अभिभावकों को इसकी सूचना दी जाय।

17/8/2013

सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching)

अध्यापक, परिवीक्षक (Supervisor) तथा विद्यार्थी तीनों जिस शैक्षिक प्रक्रिया में संलग्न है। उसे सूक्ष्म शिक्षण कहते है।

सूक्ष्म शिक्षण शिक्षण प्रशिक्षण का नूतन कार्य है। जिसमें छात्राध्यापक को वास्तविक अध्यापन से पूर्व शिक्षण कौशल का प्रशिक्षण दिया जाय। सूक्ष्म शिक्षण द्वारा शिक्षण की ~~अब~~ जटिल प्रक्रिया को सरल प्रक्रिया में परिवर्तन करके शिक्षक में शिक्षण के वांछित कौशल नाक नाक कर विकसित किये जाते है। अध्यापन विभिन्न शिक्षण कौशलों

का योग है। यदि इन कौशलों को एक-एक कर छात्राध्यापक को उनमें दक्ष किया जाय तो वह शिक्षण प्रक्रिया को शीघ्र समझ सकेगा तथा दक्षता प्राप्त कर लेगा।

(दृष्टिकोण)
सूक्ष्म शिक्षण की अवधारणाऐं

1. यह एक वास्तविक शिक्षण है।
2. इसमें शिक्षण परिस्थितियों का निर्माण कक्षा की तरह किया जाता है।
3. इस शिक्षण प्रणाली में कक्षा शिक्षण की जटिलताऐं नहीं है।
4. इसमें शिक्षण अभ्यास पर नियंत्रण किया जाना संभव है।
5. जिसमें छात्राध्यापक का पृष्ठपोषण [Feedback] (प्रतिक्रिया) शीघ्रता से किया जाता है।

19/8/2013 अध्यापन कौशल (Teaching skills)

अध्यापन कौशल से तात्पर्य है, शिक्षक के उन सभी कक्षागत व्यवहारों से है जो कि बालक की अधिगम (learning) प्रक्रिया को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित

करते है।

परिभाषा:-

क्लार्क:- "अध्यापन उन क्रियाओं पर आधारित है जो छात्र व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु नियोजित एवं क्रियान्वित किया जाय।"

अध्यापन में जो विभिन्न क्रियायें सम्मिलित है वे निम्नलिखित है।

प्रारंभ, प्रदर्शन, उदाहरण, प्राक्कल्पना (Hypothesis), आवेदन, अन्दाज लगाना, संतुष्टि, तुलना, व्याख्यान, प्रश्न आदि।

सूक्ष्म शिक्षण के अर्थ एवं परिभाषा

मैक कालस - "सूक्ष्म शिक्षण अध्यापन अभ्यासपूर्व शिक्षक प्रशिक्षणार्थी को शिक्षण कौशल को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। यह विधि सेवापूर्व या सेवारत शिक्षकों को शिक्षण कौशल के विकास या सुधार करने के काम में लाई जाती है।

सूक्ष्म शिक्षण व्यवस्था के पद

सूक्ष्म शिक्षण की प्रक्रिया में निम्नलिखित पद है:-

1. सर्वप्रथम अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों को सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ समझाता है। तथा उसका व्यवहारित ज्ञान देता है।
2. सूक्ष्म शिक्षण में शिक्षण कौशल का सैद्धान्तिक ज्ञान अभ्यास करने से पूर्व दिया जाता है।
3. अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों को आदर्श पाठ के माध्यम से शिक्षण कौशल, व्यवहार उनका प्रदर्शन करता है।
4. इस आदर्श पाठ की कमियों तथा विशेषताओं पर विचार विमर्श किया जाता है।
5. प्रशिक्षणार्थियों से सूक्ष्म शिक्षण की पाठ्ययोजनाएँ प्रत्येक शिक्षण कौशल के लिए अलग-अलग बनायी जाती है।
6. अध्यापक इन सूक्ष्म पाठ्ययोजनाओं में आवश्यकतानुसार सुधार करता है।
7. प्रशिक्षणार्थी एक कौशल पर सूक्ष्म पाठ पढ़ाता है।

8. सूक्ष्म पाठ के तुरन्त बाद पढ़ाये गये पाठ पर आपसी विचार विमर्श कर उसकी अच्छाईयां तथा कमियों का ज्ञान दिया जाता है। कमियों को दूर करने के लिए प्रशिक्षणार्थी से पाठ का पुन: निर्माण के लिए कहा जाता है।

इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों को दुबारा पाठ पढ़ाना पड़ता है। इसकी कमियाँ पुन: निकाली जाती है। तथा प्रशिक्षणार्थी इन कमियों को दूर करने का प्रयास करता है। यह क्रम तब तक चलता है जब तक की एक कौशल को पूरा नहीं सीख लेता। इसके बाद वह दूसरा कौशल सीखता है।

प्रस्तावना कौशल

कक्षा शिक्षण में जब शिक्षक पाठ पढ़ाना प्रारंभ करता है तो वह छात्रों को पाठ का परिचय देता है। इसका लाभ यह है कि बालक ध्यान को अध्यापक पाठ पर केन्द्रित कर सके। तथा प्रस्तावना के माध्यम से बालक के पूर्व अनुभवों को जाग्रत कर देता है।

इसका अभिप्राय उन समस्त क्रियाओं से है जो अध्यापक पाठ पढ़ाने से पूर्व कक्षा में छात्रों की मानसिक तैयारी हेतु करता है। पाठ की सफलता या विफलता एक सीमा तक प्रस्तावना कौशल पर निर्भर करती है।

23/8/2013

प्रस्तावना कौशल के घटक

क) पूर्व ज्ञान का उपयोग

पूर्व ज्ञान से तात्पर्य ~~छात्र~~ छात्रों के उनके अधिगम अनुभवों से है जो कि पाठ को समझने के लिए आवश्यक है। प्रत्येक नवीन ज्ञान को ग्रहण करने का आधार पूर्व ज्ञान होता है। क्योंकि मानव मस्तिष्क ~~ज्ञ~~ ~~ज्ञात~~ से ज्ञान से अज्ञान की ओर आसानी से कार्य करता है। छात्र पूर्व ज्ञान का अर्जन कक्षा से बाहर मित्र मण्डली, समाज, प्रकृति आदि से प्राप्त करता है। यदि नवीन ज्ञान को उसके अनुभवों से ~~जु~~ जोड़ जाय तो उसके सीखने की प्रक्रिया में (continuity) निरन्तरता बनी ~~रहती है~~ रहती है।

यह एक मनोवैज्ञानिक तत्व है कि मस्तिष्क किसी नवीन कार्य को ग्रहण करने से पूर्व अपने पूर्व अनुभवों की सं

संबन्ध स्थापित करता है। अतः अध्यापकों को पाठ्ययोजना बनाने से पूर्व बालक के पूर्व ज्ञान के बारे में सभी जानकारी होनी चाहिए।

पूर्व ज्ञान के संबन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए अनेक स्रोत है। अध्यापक में छात्र के पूर्व ज्ञान का अनुमान (guess) लगाने की क्षमता होना चाहिए। कक्षा स्तर, आयु स्तर, मानसिक परिपक्वता आदि ऐसे तत्व है जो पूर्व ज्ञान संबन्धित अनुमान लगाने में सहायक हो सकते है। पूर्व ज्ञान को अनेक प्रकार के उपक्रमों से बालक के चेतना स्तर पर लाया जा सकता है।

1. बीती हुए घटना, स्थिति, स्थान, नाम, वस्तु आदि के संबन्ध (सन्दर्भ) में प्रश्न पूछना।
2. समसामायिक घटनाओं का सन्दर्भ।
3. अधिगम हेतु विशिष्ट परिस्थिति उत्पन्न करना।

10.

24/8/2013

~~उपयुक्त विधियों का उपयोग~~

उपयुक्त विधाओं का उपयोग

यहाँ पर विधा से तात्पर्य उस शिक्षण तकनीक से है जो अध्यापक प्रस्तावना के लिए प्रयुक्त करता है। प्रस्तावना के लिए अनेक प्रकार की विधायें काम में लायी जा सकती है। परन्तु उसके चयन का आधार उसकी ~~उपयोग उपादेयता~~ उपादेयता, छात्रों की मानसिक स्तर, आयु, रुचि, अनुभवों की गहनता और विषय वस्तु की प्रकृति पर निर्भर रहता है। प्रस्तावना में प्रयुक्त की जाने वाली विधायें निम्नप्रकार से हो सकती है।

1. उदाहरण
2. प्रश्न पूछना
3. व्याख्या
4. कहानी या चुटकुला कहना (Jokes)
5. नाटक या अभिनय द्वारा
6. दृश्य ~~व~~ श्रव्य ~~साधनों~~ सामग्री का उपयोग
7. प्रदर्शन

यद्यपि किसी भी विधा का उपयोग एवं प्रभावशीलता अध्यापक की योग्यता पर

आधारित है।

26/8/2013

प्रस्तावना कौशल का मूल्यांकन

~~छात्राध्यापक क्रमांक~~

छात्राध्यापक का नाम

अनुक्रमांक

कक्षा

विषय

दिनांक

कौशल (प्रस्तावना)

पाठ्य प्रकरण

	प्रस्तावना कौशल घटक	1	2	3	4	5
1.	पूर्व ज्ञान का उपयोग					
2.	छात्रों के उत्तरों का उपयोग।					
3.	~~अनु~~ तारतम्यता की स्थिति					
4.	सुसंबन्धता					
5	तकनीकी की उपयुक्तता					
6						

नोट -1, उत्तम 2, बहुत अच्छा, 3. अच्छा, 4- साधारण, 5. असंतोषजनक को ~~प्रकर्शित~~ प्रदर्शित करती है। अध्यापक को इसे प्रदर्शित करने के लिए ✓ का निशान कौशल के घटक सम्मुख अंकित कर देना चाहिए।

अध्यापक की टिप्पणी   अध्यापक का हस्ताक्षर

प्रश्न कौशल (सहजता)

सुप्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात ने एक ऐसी विधि विकसित की जिसमें वह अपने शिष्यों से अनेक प्रश्न पूछता था। तथा छात्र उनके उत्तर देते-देते ज्ञानार्जन करता था। आज भी प्रश्नोत्तर विधि को सुकरात विधि कहते है।

29/8/2013

प्रश्न पूछने की कला इतनी प्राचीन होते हुए भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। तथा इसका शिक्षण में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। प्रश्न के माध्यम से छात्रों से संबन्धित कई महत्वपूर्ण ~~सोचनाएँ~~ सूचनाएँ प्राप्त कर सकते है। उदा. के लिए (निदान करने की क्षमता) छात्रों ~~के~~ का ज्ञान व अवबोध का स्तर, उसकी विषय के प्रति अभिवृत्ति, ग्रहण

किये गये ज्ञान में ~~त्रुटियाँ~~ त्रुटियाँ, अध्यापक की प्रभावशीलता आदि।

पूछने की दृष्टि से प्रश्न ~~करने~~ की कला अध्यापक के लिए एक वरदान है। शिक्षा प्रदान करने के लिए यह एक उत्तम साधन माना गया है। ~~शिक्षक में~~ शिक्षण में प्रेरणा (compliment) का विशेष महत्व है। परन्तु प्रश्न एक ऐसा माध्यम है जो कि बालकों को पढ़ने के लिए भी प्रेरित करती है। इस प्रकार शिक्षण के सम्पूर्ण प्रक्रिया प्रश्न पूछने की कला से संबन्धित है। प्रश्न पूछना एक कला है। यह कला अध्यापक की कुशलता पर निर्भर करती है।

30/8/2013

प्रश्न पूछने के उद्देश्य

1. छात्रों का ध्यान शिक्षण बिन्दुओं पर केन्द्रित रखने के लिए।
2. शिक्षण प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रखने के लिए।
3. छात्रों के पूर्वज्ञान तथा अभिरुचि का परीक्षण करने के लिए।

4. शिक्षण के दौरान सीखी गयी पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन करना।

5. शिक्षक यह जान सके कि छात्र सीखे गये ज्ञान का अन्य परिस्थितियों में उपयोग कर सकें या नहीं।

(दोहराना)

6. सीखी गयी पाठ्यवस्तु की पुनरावृत्ति करने के लिए।

7. छात्रों की विचार ~~अभिव्यक्ति~~ अभिव्यक्त करने की शक्ति, स्मृति तथा कल्पना शक्ति को प्रेरित करने के लिए।

8. शिक्षण की सफलता अध्यापक की प्रश्न कला पर निर्भर है।

प्रश्नों के प्रकार (Types of questions)

अध्यापक को प्रश्न के प्रकार का भी ज्ञान होना चाहिए। मानसिक प्रक्रिया के आधार पर प्रश्नों को दो प्रकार में बाँटा जा सकता है।

1. स्मृति प्रश्न (Remembering question)
2. विचार प्रश्न (Ideal question)

स्मृति प्रश्न

ये छात्रों के पूर्वपठित परिभाषा, तथ्य, प्रक्रिया, आदि से संबन्धित होते है। तथा इनके उत्तर में छात्रों को अपनी स्मृति में उपस्थित ज्ञान को उत्तर के रूप में प्रकट करना होता है। उदाहरण के लिए ① संज्ञा की परिभाषा दीजिए?
② संज्ञा कितने प्रकार होते हैं?

इस प्रकार के प्रश्न छात्रों द्वारा सीखी गयी पाठ्यवस्तु से (recollect) सीधे संबन्धित है। तथा उसका प्रत्यास्मरण करना चाहिए।

2. विचार प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों से छात्र को नवीन परिस्थिति में ज्ञान का उपयोग करना होता है। इसके उत्तर देने में छात्रों को उच्च मानसिक स्तर का उपयोग करना पड़ता है। अत: ये प्रश्न अधिक कठिन स्तर के माने जाते है।

3/8/2013 अच्छे प्रश्न के गुण

प्रश्न का निर्माण करते समय पूर्ण सावधानी बर्तनी चाहिए। अच्छे प्रश्न में निम्नलिखित गुण होते हैं।

1. उद्देश्य की प्राप्ति
2. भाषा, सरल, शुद्ध एवं स्पष्ट।
3. छात्र अपने स्मृति, चिन्तन एवं तर्क शक्ति का उपयोग कर सके।
4. संक्षिप्त एवं प्रत्यक्ष
5. प्रश्न का उत्तर निश्चित तथा सदैव एक हो।
6. क्रियाशीलता उत्पन्न करें।
7. प्रश्न में तार्किक क्रम हो।

8. प्रश्न पूछने की तरीका

अध्यापक प्रश्न किस प्रकार पूछे यह उसके विवेक तथा कक्षा के स्थिति पर निर्भर करता है।

1. सभी छात्रों से प्रश्न पूछना चाहिए।
2. प्रश्न पूछते समय छात्रों का नाम लेना चाहिए।

3.

प्रशाव

~~मूल्यांकन कौशल का मूल्यांकन~~

प्रश्न - कौशल का मूल्यांकन

अध्यापक का नाम

अनुक्रमांक

कक्षा

विषय

दिनांक

कौशल

	प्रश्न कौशल के घटक					
1.	व्याकरणिक शुद्धता					
२.	प्रकरण से सुसंबद्धता					
3.	संक्षिप्तता					
4.	उचित गति एवं विराम					
5.	सुश्रव्यता					
6.	अनावश्यक आवृत्ति					
7.	प्रश्न संख्या की पर्याप्तता ~~निरीक्षक की टिप्पणी~~ ~~निरीक्षक की टिप्पणी~~					

निरीक्षक की टिप्पणी

निरीक्षक के हस्ताक्षर

6/9/2013 व्याख्यान कौशल

व्याख्यान देना शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है। व्याख्यान के अन्तर्गत अध्यापक का स्थान प्रमुख माना जाता है। वह पाठ्य सामग्री के प्रत्येक भाव को सरल एवं (सम्प्रेषणीय) बोधगम्य भाषा में छात्रों को स्पष्ट करते हैं। कठिन बातों को उदाहरण द्वारा सरल करके समझाया जाता है। तथा विश्लेषण कर विद्यार्थियों को स्पष्ट किया जाता है।

व्याख्यान का अर्थ

व्याख्यान का अर्थ शिक्षक द्वारा छात्रों को ज्ञान की मौखिक व्याख्या करने से इसमें शिक्षक पाठ्यवस्तु को छात्रों को स्पष्ट करने के लिए बोलता रहा है। पाठ की प्रभावशीलता अध्यापक के विचार व्यक्त करने की योग्यता पर निर्भर करती है।

व्याख्या को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता सकता है।-

थॉमस एम. रिस्क "व्याख्यान उन तथ्यों, सिद्धान्तों या अन्य संबन्धों का स्पष्टीकरण है जिनको शिक्षक चाहता है कि उसके सुनने वाले समझें।"

व्याख्यान कौशल में निम्नलिखित प्रमुख तत्व है।

① विन्यासप्रेरणा।

② विचार व्यक्त करने की क्षमता

③ वाणी की विविधता

④ ~~[illegible]~~ अंत: क्रिया में परिवर्तन

⑤ पाठ की गति

⑥ व्याख्यान समापन

10/9/2013

① विन्यास प्रेरणा।

व्याख्यान प्रारंभ करने के ~~कौशल~~ को विन्यास प्रारंभ प्रेरणा कहते है। यदि व्याख्या का ~~[illegible]~~ रुचि~~[illegible]~~ कर तथा प्रेरणा दायक है तो अध्यापक विद्यार्थियों के ध्यान को पाठ्य~~[illegible]~~ भाग की ओर आसानी से केन्द्रित कर सकेगा। विन्यास प्रेरणा के लिए छात्रों के दैनिक जीवन के अनुभव, पूर्व घटित घटनाएँ ऐतिहासिक घटनाएँ इत्यादि का उल्लेख किया जा सकता है।

② विचार व्यक्त करने की क्षमता

व्याख्यान कौशल में अध्यापक की विचार व्यक्त करने की क्षमता अत्यधिक महत्व रखती है। अध्यापक का मानसिक स्तर छात्रों से उच्च स्तर का होता है। यदि वह अपनी योग्यता एवं मानसिक स्तर अनुसार ही भाषा का प्रयोग करता है तो विचारों को छात्रों तक पहुँचाने में असमर्थ रहेगा। अध्यापक की भाषा यदि बालक के स्तरानुसार है तथा वह उनके अनुभवों को आधार बनाकर उन्हीं की भाषा में विषयवस्तु को स्पष्ट करता है। तभी व्याख्यान में बालक रुचि प्रदर्शित करेगा।

यहाँ यह भी ध्यान देने की योग्य बात है कि अध्यापक को उच्चारण संबन्धी तथा वर्तनी (spelling) संबन्धी त्रुटियाँ नहीं करनी चाहिए। क्योंकि बालक अध्यापक को सदैव आदर्श मानता है।

③ वाणी की विविधता

वाणी शब्दों का वाहक है यदि वह मधुर एवं कर्णप्रिय है तो बालक

व्याख्यान को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। अधिक धीमी, अधिक तेज आवाज दोनों ही व्याख्यान कौशल को अप्रभावी बनाते है।

व्याख्यान में नाक जैसे वाणी व्याख्यान को नीरस बनाते हैं।

23/9/2013

4. अतः क्रिया में परिवर्तन

शिक्षण को प्रमुख रूप से शिक्षक शिक्षार्थी अतः क्रिया माना जाता है। यदि अध्यापक व्याख्यान में स्वयं ही बोलता रहता है तो अध्यापक सक्रिय है। परन्तु विद्यार्थी निष्क्रिय होता है। व्याख्यान के उत्तम कौशल के लिए आवश्यक है कि समय - समय पर छात्रों से प्रश्नों को आमंत्रित करना चाहिए। ताकि विषयवस्तु को उन्हें और अधिक स्पष्ट ~~हो सके~~ किया जा सकता है।

5. पाठ की गति

पाठ की गति से तात्पर्य ~~यह~~ पाठ्यवस्तु की प्रस्तुतीकरण की गति से व्याख्यान देने में पाठ्यवस्तु

जिस गति से छात्रों को दी जा रही है यदि उसी गति से छात्र उसे ग्रहण कर रहे तो यह एक उत्तम स्थिति है। परन्तु छात्रों में व्यक्तिगत भिन्नताएँ हैं। अतः अध्यापक को चाहिए कि वह व्याख्यान देते समय औसत छात्रों की सीखने की (Average) गति से पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण करें।

6. व्याख्यान समापन

व्याख्यान समापन भी एक कौशल है। यदि कोई व्याख्यान अचानक समाप्त हो जाता है तो यह उत्तम प्रकृति का व्याख्यान नहीं मानता। व्याख्यान समाप्ति सामान्यतः जो कुछ पूरे व्याख्यान में स्पष्ट किया गया है उसके सार संक्षेप से की जानी चाहिए।

व्याख्यान कौशल का मूल्यांकन

1. अध्यापक का नाम
2. अनुक्रमांक
3. कक्षा
4. विषय

दिनांक

कौशल

व्याख्यान कौशल के घटक	1	2	3	4	5
1. विन्यास प्रेरणा					
2. विचार व्यक्त करने की क्षमता					
3. वाणी की विविधता					
4. अंत: क्रिया में परिवर्तन					
5. पाठ की गति					
6. व्याख्यान समापन					

(निरीक्षक)
अध्यापक की टिप्पणी

अध्यापक के
हस्ताक्षर

24/9/2013 पुनर्बलन कौशल (reinforcement)

स्किनर के अनुसार- "किसी विद्यार्थी को उसके सही होने के ज्ञान को देना उसको पुनर्बलित करना है।" बालक के लिए अनेक प्रेरक हैं जिनको प्राप्त कर वह आनन्द की अनुभूति करता है। जैसे परीक्षा में अच्छे अंक या श्रेणी प्राप्त करना, अच्छी उपाधी प्राप्त करना आदि। इसी प्रकार विद्यालय या समाज द्वारा उसके कार्यों की प्रशंसा स्वरूप कोई मोडल या इनाम, पुरस्कार आदि प्रदान करना भी उसे और अधिक अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यह सब बालक के अच्छे कार्यों को पुनर्बलित करते है।

पुनर्बलन की परिभाषा

लीडहम और अनविन - "विद्यार्थियों को उनकी प्रकृति का ज्ञान देना, उनको पुनर्बलित करता है। इससे उनके व्यवहार को उसके द्वारा पुनः प्रकट करने की संभावना।

बढ़ जाती है।"

हल (Hull) - "पुनर्बलन वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति में उत्पन्न चालक की संतुष्टि होती है।"

पुनर्बलन का शिक्षण पर प्रभाव

यदि अध्यापक बालकों को प्रोत्साहित करता है तथा उनके द्वारा किये गये अनुकूल व्यवहारों का सही समय पर पुनर्बलन कर देता है तो इससे बालक की सीखने क्रिया अधिक तीव्र गति से तथा प्रभावशाली रूप में होगी। इसके विपरीत वह यदि ऐसा नहीं कर पाता है तो बालक को सही तथा गलत के भेद नष्ट हो सकेगा तथा वह शीघ्र थक जायेगा।

पुनर्बलन के कौशल का अर्थ

अध्यापक कक्षा में शिक्षण के दौरान छात्रों से विभिन्न क्रियायें कराते है। जब बालक किसी इच्छित व्यवहार का प्रदर्शन करता है अध्यापक उसे शाब्दिक या अशाब्दिक स्वीकृति

प्रदान कर पुनर्बलित कर देता है। इससे बालक की प्रतिक्रिया शक्ति को बढ़ाव मिलता है।

26/9/2013

स्कीनर का यह मानना है कि अध्यापक द्वारा छात्रों की प्रशंसा करना, उत्तर को स्वीकार करना तथा सिर हिलाने आदि से बालक का पुनर्बलन संभव है। ये सब कार्य अध्यापक द्वारा उस समय किया जाता है जब बालक सही अनुक्रिया कर रहा हो। यह अध्यापक के कौशल पर निर्भर है कि इस व्यवहार को किस समय तथा किस प्रकार से पुनर्बलित किया जाय।
उसकी अनुसार पुनर्बलन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रतिक्रिया के तुरन्त बाद किसी ~~उद्दीपक~~ उद्दीपक को यदि उपस्थित किया जाये तो व्यक्ति की प्रतिक्रिया शक्ति बढ़ती है। उसने प्रयोगों के आधार पर निम्न चार निष्कर्ष निकाले है।

1. पुनर्बलन से सीखने की क्रिया शीघ्र होती है।

② पुनर्बलन प्रतिक्रिया के तुरन्त बाद उपस्थित उद्दीपक द्वारा होता है।

③ प्रतिक्रिया तथा उद्दीपक के मध्य समयान्तराल बहुत कम होना चाहिए।

④ अनुकूलन के लिए पुनर्बलन का होना आवश्यक है।

पुनर्बलन दो प्रकार से संभव है।

- प्राथमिक तथा द्वितीयक

प्राथमिक-जैसे किसी बालक के सही उत्तर लिखने पर इनाम देना या शबाशी देना। द्वितीयक पुनर्बलन में अध्यापक यदि बालक द्वारा सही उत्तर देने पर उनको तुरन्त शबाशी देता है तथा विद्यार्थी तालियाँ बजाते है तो तालियाँ उसके लिए द्वितीयक उद्दीपक का कार्य करता है।

पुनर्बलन को उसके प्रभाव की दृष्टि से दो भागों में अर्थात सकारात्मक पुनर्बलन (Positiv

28/9/2013

reinforcement) तथा नकारात्मक पुनर्बलन (Negative reinforcement) के रूप में विभक्त किया जा सकता है। अध्यापक द्वारा विद्यार्थी की प्रशंसा करना उसे प्रशंसा देना आदि सकारात्मक पुनर्बलन की उदाहरण है। जो कि उसे और अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देता है। जब कि नकारात्मक पुनर्बलन के उदाहरण है डाँटना, दण्ड देना, फटकारना आदि है। शोध कार्य के परिणामों से यह मालूम हुआ है कि नकारात्मक पुनर्बलन बालक के अधिगम को प्रभावित नहीं करता है। अत: अध्यापक को इसका प्रयोग यथासंभव नहीं करना चाहिए। छात्र त्रुटि करने पर उनको अध्यापक द्वारा शान्तिपूर्वक सुधार ~~करना~~ किया जाना चाहिए।

पुनर्बलन के सामान्य सिद्धान्त

① उत्साह वर्धक

पुनर्बलन का संबन्ध बालक के उत्साह वर्धक ~~के साथ~~ से होता है। अध्यापक को पुनर्बलन का प्रयोग उचित समय प्रभावकारी रूप से करना

चाहिए। इससे कि बालक स्वयं को सम्मानित एवं गौरवान्वित महसूस करें।

② पुनर्बलन की विविधता

एक ही प्रकार के पुनर्बलन का प्रयोग करने पर धीरे-धीरे यह प्रभाव हीन हो जाता है।

③ पुनर्बलन की आवृत्ति

यदि अध्यापक बालक के प्रत्येक उत्तर का पुनर्बलन करें तो इस प्रकार से किया गया पुनर्बलन प्रभावहीन हो जायेगा।

④ पुनर्बलन एवं प्रतिक्रिया के मध्यसमय

यदि प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन के मध्य समय अधिक होता है तो पुनर्बलन का प्रभाव कम हो जाता है।

पुनर्बलन की उपयुक्तता

पुनर्बलन का सीधा संबन्ध बालक में उत्साह पैदा करने

से है। इसका प्रयोग करते समय छ
के आयु, लिंग, शैक्षिक स्तर आदि क
ध्यान रखा जाना चाहिए। बड़े छात्र
केवल प्रशंसा से ही पुनर्बलित हो जाते है।
जब कि छोटे बालक वस्तुओं को प्राप्त
कर आसानी से पुनर्बलित होते है।

शिक्षण की दृष्टि से
पुनर्बलन अत्यधिक महत्वपूर्ण कौशल है।
अध्यापक इस कौशल का निम्न
प्रकार से प्रयोग कर सकते है।

1. मौखिक स्वीकृति (हिन्दी)
2. ~~समीपता~~ हाव-भाव स्वीकृति
3. समीपता
4. स्पर्श
5. छात्र ~~[illegible]~~ उत्तरों का प्रयोग
6. अतिरिक्त अर्थ ~~[illegible]~~ ~~सन्देह~~ संकेत

पुनर्बलन कौशल का मूल्यांकन

छात्राध्यापक का नाम
अनुक्रमांक
कक्षा
विषय
दिनांक
कौशल
पाठ्य प्रकरण

पुनर्बलन कौशल के घटक	1	2	3	4	5
1. मौखिक स्वीकृति					
2. हाव - भाव स्वीकृति					
3. समीपता					
4. स्पर्श					
5. छात्र उत्तरों का प्रयोग					
6. अलिखित अर्थ संकेत					
7. पुनर्बलन की उपयुक्तता					
8. पुनर्बलन की आवृत्ति					

निरीक्षक की टिप्पणी — अध्यापक के हस्ताक्षर

30/9/2013

श्यामपट्ट कार्य कौशल

श्यामपट्ट साधारणतः अध्यापक का मित्र कहा गया है। क्योंकि यह अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में बहुत अधिक सहायक है। परन्तु यह अध्यापक कौशल पर निर्भर करता है।

श्यामपट्ट की उपयोगिता

ज्ञानार्जन छात्रों के इन्द्रियों के द्वारा होता है। जितने अधिक इन्द्रियों का

बहुत उपयोग करेगा उतनी ही सरलता से वह इसे प्राप्त कर सकेगा। यदि योग्य अध्यापक श्यामपट्ट की सहायता से दृश्य उपकरणों की कमी को भी पूरा कर सकता है।

श्यामपट्ट की सहायता से

पाठ्यवस्तु, कक्षाकार्य अथवा गृहकार्य को आसानी से सम्पूर्ण कक्षा के समुख प्रस्तुत किया जा सकता है। किसी प्रश्न को हल करता है तो उसको सभी छात्र देखकर समझ लेते हैं। इससे अध्यापक को अलग-अलग विद्यार्थियों को समझाना नहीं पड़ता। तथा उसके समय और श्रम की बचत होती है। पाठ्यवस्तु के विकास में ही श्यामपट्ट पूर्ण रूप से उपयोगी है। स्मृति के विकास में यह विशेष योगदान देता है। इसपर स्मरणीय घटनाएँ, संख्या, शब्द, एवं महत्वपूर्ण नामों को लिखकर विद्यार्थियों को ~~प्रदर्शित प्रदर्शित~~ प्रदर्शीत कर सकता है। लेखन तथा अक्षरों की सुन्दर बनावट के अभ्यास के लिए ही श्यामपट्ट उपयोगी माना गया है।

यह आवृत्ति कार्य एवं मूल्यांकन दोनों के लिए ही उपयोगी है।

श्यामपट्ट की उपयोग की विधि

श्यामपट्ट का प्रभावी प्रयोग निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

① श्यामपट्ट पर लेखन कार्य सुन्दर हो। इसके लिए यह आवश्यक है कि इस पर लिखने का पर्याप्त अभ्यास व्यक्ति को कर लेना चाहिए। श्यामपट्ट पर लिखने के लिए पूर्ण अभ्यास की आवश्यकता होती है।

② श्यामपट्ट में अक्षर सुडौल, सुन्दर एवं सीधी रेखा में तथा स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए।

③ श्यामपट्ट पर अध्यापक ~~को कुछ लिखे~~ श्यामपट्ट पर कुछ लिखने से पहले को खूब सोच समझकर लिखना चाहिए। अशुद्ध शब्द या वाक्य लिखने से बालक भी इसे आदर्श मानकर वैसा ही लिखना सीख जाते है।

④ श्यामपट्ट पर सदैव अध्यापक द्वारा

लिखा जाना नीरस हो जाता है। इसलिए अध्यापक को कभी-कभी विद्यार्थियों को भी अवसर देना चाहिए।

⑤ श्यामपट्ट पर हम जो कुछ लिखते हैं वे सभी विद्यार्थियों द्वारा ठीक प्रकार से देखा जा सके।

⑥ श्यामपट्ट को लिखते समय चाक (chalk) की आवाज़ नहीं होना चाहिए।

⑦ अध्यापक को पढ़ाते समय चाक हाथ में रखना तथा उसे ~~उछालने~~ उछालने की आदत पड़ जाती है। यह अच्छी आदत नहीं है। इससे बचाना चाहिए। अध्यापन पूरा होने पर कक्षा छोड़ने से पहले श्यामपट्ट साफ कर देना चाहिए।

1/10/2013

⑧ श्यामपट्ट पर अध्यापक लिखते समय यदि पढ़कर जाये तो यह अधिक प्रभावी होगी।

⑨ लिखते समय अध्यापक को इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि उसके शरीर से श्यामपट्ट ढक न जायें। इसके लिए अध्यापक किनारे पर खड़े होकर लिखा है तो इससे श्यामपट्ट को बालक आसानी से पढ़ सकते है।

(10) श्यामपट्ट पर चित्र आदि बनाते समय स्पष्ट, सुन्दर ~~का~~ तथा सही अनुपात में होना चाहिए।

श्यामपट्ट का सही उपयोग करने के लिए एक अध्यापक को निम्न गुणों को विकसित करना चाहिए।

① सुपाठ्यता या सुलेखन
② व्याकरणिक शुद्धता
③ व्यवस्थित लेखन
④ सुसंबद्ध लेखन
⑤ संक्षिप्तता
⑥ उपयुक्तता
⑦ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करना।

श्यामपट्ट कार्य कौशल का मूल्यांकन

~~श्यामपट्ट कार्य कौशल के घटक 1 2 3 4 5~~

छात्राध्यापक का नाम

अनुक्रमांक

कक्षा

विषय

दिनांक

कौशल

पाठ्य प्रकरण

श्यामपट्ट कौशल के घटक	1	2	3	4	5
1. सुपाठ्यता या सुलेखन					
2. व्याकरणिक शुद्धता					
3. व्यवस्थित लेखन					
4. सुसंबन्ध लेखन					
5. संक्षिप्तता					
6. उपयुक्तता					
7. महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करना।					

निरीक्षक की टिप्पणी

अध्यापक के हस्ताक्षर

श्यामपट्ट अध्यापन के लिए सस्ता, सुलभ एवं उपयोगी उपकरण है। यह शिक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। इस पर लिखे शब्द, तथ्य घटनाएँ, चित्र आदि बालक की स्मृति में स्थायी बन सकता है। इसको अध्यापक का सच्चा मित्र माना जाता है। क्योंकि यह अध्यापन को आधार प्रदान करता है। श्यामपट्ट कार्य करने की तरीके को श्यामपट्ट कौशल कहते है। अव्यवस्थित रूप से किया जाया

श्यामपट्ट कार्य बालक को भ्रमित करता है।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
केरल शाखा, बी.एड. प्रशिक्षण
महाविद्यालय, अम्बाडीमला, एरणाकुलम

सूक्ष्म-शिक्षण पाठयोजना - प्रस्तावना कौशल

छात्राध्यापिका का नाम - अर्चा विद्यालय का नाम - बी.एड. कॉलेज, अम्बाडी मला विषय - हिन्दी प्रकरण - डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम अवधि - 10 मिनट

विशिष्ट उद्देश्य : प्रस्तावना कौशल में छात्राध्यापक को कुशलता प्राप्त करने लिए

क्र.सं	नाम	अनुक्रमांक	हस्ताक्षर
1			
2.			
3			
4			
5			
6			
7			
8			

~~पर्यवेक्षक~~
पर्यवेक्षक
(Consent Teacher)

समयपालक

छात्राध्यापिका क्रियायें	छात्र क्रियायें	फलक कार्य
1. विद्यालय में पढने के लिए क्या - क्या विषय होते है?	विद्यालय में पढने के लिए भाषा, विज्ञान, सामाजिक शास्त्र, गणित आदि होते है।	
२. इन विषयों में शास्त्र के पर्यवाची शब्द के रूप में कौन - सा विषय आते है?	~~हम विषय~~ शास्त्र के पर्यवाची शब्द के रूप में विज्ञान शब्द आता है।	
3. विज्ञान से संबंधित कार्य करने वालों को क्या कहते है?	विज्ञान से संबंधित कार्य करने वालों को वैज्ञानिक कहते है।	

4. बम्ब को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लेकर विस्फोटन करने योग्य उपकरण का नाम क्या है?	बम्ब को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लेकर विस्फोटन करने योग्य उपकरण का नाम 'मिसाइल' है।
5. भारत में मिसाइल मैन नाम से जाने जाते हैं?	भारत में डॉ. अब्दुल कलाम को मिसाइल मैन नाम से जाने जाते हैं।

डॉ. ए.पी. अब्दुल कलाम

उद्देश्य कथन:- बच्चों आज हम डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम नामक पाठ पढ़ेंगे।

प्रस्तावना कौशल ~~का मूल्यांकन~~

(मूल्यांकन मान)

छात्राध्यापिका का नाम: अर्वा

विषय: हिन्दी

कक्षा:

दिनांक:

इकाई:

पर्यवेक्षक का नाम

क्र.स	घटक	मूल्यांकन मान	कुल
1.	पूर्वज्ञान का उपयोग	1 2 3 4 5	
2.	छात्रों के उत्तरों का उपयोग	1 2 3 4 5	
3.	तारतम्यता	1 2 3 4 5	
4.	सुसंबद्धता	1 2 3 4 5	
5.	तकनीकी की उपयुक्तता	1 2 3 4 5	

प्रतिपुष्टी
(feed back)

सूक्ष्म शिक्षण पाठयोजना : व्याख्यान
कौशल

छात्राध्यापिका का नाम :

विद्यालय का नाम :

विषय :

प्रकरण :

अवधि :

दिनांक :

विशिष्ट उद्देश्य :- व्याख्यान कौशल में छात्राध्यापिका को कुशलता प्राप्त करने के लिए

क्रम नाम अनुक्रमांक

पर्यवेक्षक

समय पालक

छात्राध्यापिका क्रियायें	छात्र क्रियायें	श्यामपट्ट कार्य
डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जन्म मद्रास राज्य के रामेश्वरम के एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता को जैनुलब्दीन कोई अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी और नहीं वे धनी व्यक्ति थे।		

घर के बड़े बुद्धिमान और उनके दिल में उदारता की भावना फली हुई थी।		
1. डॉ. ए. पी. जे कलाम का जन्म कहाँ था?	डॉ. ए. पी. जे कलाम का जन्म मद्रास राज्य के रामेश्वरम के मध्य वर्गीय परिवार में हुआ था।	डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम
अब्दुल कलाम हमारे भूतपूर्व		

सूक्ष्म पाठयोजना - प्रश्न कौशल

छात्राध्यापिका का नाम :

विद्यालय

छात्राध्यापिका का नाम :

विद्यालय का नाम :

विषय :

प्रकरण :

अवधि :

दिनांक :

विशिष्ट उद्देश्य : प्रश्न कौशल में छात्राध्यापक को कुशलता प्राप्त करने के लिए

क्र.सं	नाम	अनुक्रमांक	हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक

समयपालक

छात्राध्यापिका क्रियायें	छात्र क्रियायें	श्यामपट्ट कार्य
विषय वस्तु डॉ. ए. पि. जे अब्दुल कलाम का जन्म अक्तूबर पन्द्रह 1931 मे मद्रास राज्य के रामेश्वरम में हुआ था। उनके पिता का नाम जैनुलाबुद्दीन था उनकी माता आशीअम्मा थी। उनका पूरा नाम अब्दुल पाकीर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। उनकी प्राथमिक शिक्षा स्वार्टस हाईस्कूल रामनाथपुरम में थी। उन्होंने डिग्री सेन्ट जोसफ कॉलेज में किया। उन्होंने Aeronotic engineering diploma मद्रास Institute of chennai में किया। भारत देश उन्हें पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया। आत्मकथा का	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम

नाम है आंधि की उड़ान।

(1) डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म कब हुआ?	अब्दुल कलाम का जन्म 1931 अक्तूबर 15 को हुआ था।	15 अक्तूबर 1931
(2) अब्दुल कलाम का जन्म कहाँ हुआ?	अब्दुल कलाम का जन्म मद्रास राज्य के रामेश्वरम में हुआ था।	मद्रास के रामेश्वरम
(3) उनके पिता का नाम क्या है?	उनके पिता का नाम जैनुलाब्दीन है।	जैनलबुद्दीन
(4) उनकी माता का नाम क्या था?	उनकी माता का नाम आशियम्मा थी।	आशीयम्मा।
(5) उनके पूरा नाम क्या थे?	उनके पूरा नाम Abdul Pakker Jainalabudeen Abdul kalam थे	अब्दुल पक्कीर जैनुब्दीन अब्दुल कलाम
(6) उनकी प्राथमिक शिक्षा कहाँ थी?	उनकी प्राथमिक शिक्षा स्कूर्टस high school राम नाम पुरम में थी।	स्कूर्टस हाईस्कूल रामनामपुरम
(7) इन्होंने डिग्री कहाँ की?	उन्होंने Degree St. जोसफ college में किया।	St. Joseph colleage
(8) उन्होंने Aironoticeal Engineering diploma कहाँ की?	उन्होंने Aironotical engineering diploma Madras Institute of Technology chennai में किया	Madras Institute of Technology chennai.
(9) भारत देश उनको किससे सम्मानित किया?	भारत देश उनको पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया।	पद्म भूषण

10. उनके आत्मकथा का नाम क्या है? — उनके आत्मकथा का नाम अग्नि की उड़ान है। 'अग्नि की उड़ान'

प्रश्न कौशल

मूल्यांकन का भाग

छात्राध्यापिका का नाम : अर्बी प्रकाश

विषय :

कक्षा

दिनांक

इकाई

पर्यवेक्षक का नाम

निरीक्षक की टिप्पणी

अध्यापक के हस्ताक्षर

क्र.	घटक	मूल्यांकन मापन					कुल
1.	व्याकरणिक शुद्धता	1	2	3	4	5	
2.	प्रकरण से सुसंबद्धता	1	2	3	4	5	
3.	संक्षिप्तता	1	2	3	4	5	
4.	उचित गति एवं विराम	1	2	3	4	5	
5.	अनावश्यक आवृत्ति	1	2	3	4	5	
6.	सुश्रव्यता	1	2	3	4	5	
7.	प्रश्न संख्या की पर्याप्तता	1	2	3	4	5	

सूक्ष्म पाठ्य योजना - पुनर्बलन कौशल

छात्राध्यापिका का नाम :

विद्यालय का नाम

विषय

प्रकरण

अवधि

दिनांक

विशिष्ट उद्देश्य : छात्राध्यापिका को पुनर्बलन कौशल में निपुणता प्राप्त करना।

क्रम. सं.	नाम	अनुक्रमांक	हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक :

समयपालक :

छात्राध्यापिका क्रियायें	छात्र क्रियायें	श्यामपट्ट कार्य
विषय वस्तु डॉ. ए. पी. जे ... - - - - - - - - - - - - 'अग्नि के उड़ान' प्रश्न		
1 इस पाठ का शीर्षक ~~का~~ क्या है?	इस पाठ का शीर्षक है डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम	
बहुत अच्छा		
2. DR. A. P. J अब्दुल कलाम का जन्म कब हुआ?	DR. A. P. J अब्दुल कलाम का जन्म अक्तूबर 15 1931 में हुआ था।	
शाबाश		

3. Dr. A. P. J अब्दुल कलाम का पिता का नाम क्या था? अच्छा	Dr. A. P. J अब्दुल कलाम का पिता का नाम जैनुलब्दुदीन था।
4. Dr. A. P. J अब्दुल कलाम का माता का नाम क्या था? बहुत सही।	Dr. A. P. J अब्दुल कलाम का माता का नाम आशीयम्मा थी।
5. उनके पूरा नाम क्या थे? ठीक है।	उनके पूरा नाम अब्दुल फकीर जैनुलब्दीन अब्दुल कलाम थे।
6. उनके आत्मकथा का नाम क्या है? बिलकुल सही।	उनके आत्मकथा का नाम "अग्नि के उड़ान'

पुनर्बलन कौशल

मूल्यांकन ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ मान

छात्राध्यापिका का नाम

विषय:

कक्षा:

दिनांक:

इकाई:

पर्यवेक्षक का नाम:

घटक	मूल्यांकन मान
1. मौखिक स्वीकृति	1 2 3 4 5
2. हाव - भाव स्वीकृति	1 2 3 4 5
3. समीपता	1 2 3 4 5
4. स्पर्श	1 2 3 4 5
5. छात्र उत्तरों का प्रयोग	1 2 3 4 5
6. अतिरिक्त अर्थसंकेत	1 2 3 4 5
7. पुनर्बलन की उपयुक्तता	1 2 3 4 5
8. पुनर्बलन की आवृत्ति	1 2 3 4 5

निरीक्षक की टिप्पणी — अध्यापक के हस्ताक्षर

सूक्ष्म पाठयोजना - श्यामपट्ट कार्य कौशल

छात्राध्यापिका का नाम :
विद्यालय का नाम :
विषय :
प्रकरण :
अवधि :
दिनांक

विशिष्ट उद्देश्य : छात्राध्यापिका को श्यामपट्ट कार्य कौशल विकुसना निपुणता प्राप्त करने के लिए।

क्र.	नाम	अनुक्रमांक	हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक:

समयपालक:

छात्राध्यापिका क्रियायें	छात्र क्रियायें	श्यामपट्ट कार्य
1. छात्राध्यापक विषय वस्तु से संबन्धित कुछ शब्द फलक पर लिखती है।	छात्र लिखे गये शब्दों या वाक्यों को ध्यान पूर्वक देखते है और ~~सुनके~~ पढते है।	
2. लड़का चलता है। लड़की चली। ~~विद्यार्थी~~ विद्यार्थियाँ चलेंगे।	~~लड़का चलता है~~	लड़का चलता है। लड़की चली। विद्यार्थियाँ चलेंगे।
3. ऊपर ~~के~~ लिखे वाक्यों से किसका बोध होता है।	ऊपर लिखे वाक्यों से काल का बोध होता है।	काल
4. काल किसे कहते है?	जो शब्द क्रिया के व्यापार के समय का और उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था का बोध कराता है उसे काल कहते है।	जो शब्द क्रिया के - - - - - - - - कहते है।
5. काल के कितने भेद होते है	काल के तीन भेद होते है।	तीन भेद
काल के तीन भेद कौन कौन से है?	वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत काल	वर्तमान काल भूतकाल भविष्यत काल

श्यामपट्ट कार्य कौशल
मूल्यांकन मापन

छात्राध्यापिका का नाम : अर्पा प्रकाश
विषय :
कक्षा :
दिनांक :
इकाई :
पर्यवेक्षक का नाम :

क्र. घटक	मूल्यांकन मान	कुल
1. सुपाठ्यता या सुलेखन	1 2 3 4 5	
2. व्याकरणिक शुद्धता	1 2 3 4 5	
3. व्यवस्थित लेखन	1 2 3 4 5	
4. सुसंबद्ध लेखन	1 2 3 4 5	
5. संक्षिप्तता	1 2 3 4 5	
6. उपयुक्तता	1 2 3 4 5	
7. महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करना।	1 2 3 4 5	

निरीक्षक की टिप्पणी

अध्यापक के हस्ताक्षर

Continuous वर्तमान काल किसे कहते है?	क्रिया के जिस रूप से वर्तमान के समय में उसके होने का बोध होता है उसे वर्तमान काल कहते हैं।	क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल कहते है। उदा: लड़का चलता है। राम पढ़ता है।

प्रदत्तकार्य

8/10/2013

① हिन्दी भाषा के बारे में भारतीय संविधान में क्या उल्लेख किया गया है?

② भाषा के विभिन्न रूपों का सविस्तार वर्णन कीजिए?

19/10/2013

स्थूल पाठयोजना - I

छात्राध्यापिका का नाम: अर्बी प्रकाश

~~स्थूल पाठयोजना~~ विद्यालय का नाम: बी. फाड़ कालेज

विषय : हिन्दी
कक्षा : आठवी
प्रकरण : सफर लम्बा है मंजिल बाकी है।
अवधि : 35-40 मिनट
कलांश : V
दिनांक : 19/10/2013

19/10/2013

विषय वस्तु: सफर लम्बा है मंजिल बाकी है।
(पाठ्यवस्तु)

किरण बेदी

अगर आप .... पहली महिला हूँ।

<u>पूर्वज्ञान</u> :- ~~किरण बेदी~~ छात्रों को किरण बेदी के बारे में सामान्य जानकारी है।
(किरण बेदी के बारे में कुछ-न-कुछ जानकारी है)

<u>सामान्य उद्देश्य</u> :- ~~छात्र~~

1. छात्रों में सुनकर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता ~~का~~ का विकास करना।
2. छात्रों में बोलकर ~~अर्थ ग्रहण~~ अपने विचारों को प्रकट करने की क्षमता का विकास करना।
3. छात्रों में पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना है।
4. छात्रों में लिखकर अपने विचारों को प्रकट करने की क्षमता का विकास करना।
5. छात्रों को हिन्दी लिपि का ज्ञान करवाना।

विशिष्ट उद्देश्य :- किरण बेदी की आत्मकथा 'सफर लम्बा है, मंजिल बाकी है' के द्वारा बच्चों को आत्मविश्वास एवं धैर्य के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देना।

सहायक सामग्री :- (Teaching aids)

किरण बेदी का चित्र, चार्ट, आदि।

छात्राध्यापिका क्रियायें	छात्र क्रियायें	श्यामपट्ट कार्य
प्रस्तावना :-		
1. चोर क्या करता है?	चोर चोरी करता है।	
2. चोर को कौन पकड़ते है?	चोर को पुलिस पकड़ते है।	
3. सबसे उन्नत पुलिस अधिकारी का पद क्या है?	सबसे उन्नत पुलिस अधिकारी का पद I.P.S है।	
4. भारत की प्रथम महिला पुलिस अधिकारी कौन है?	भारत की प्रथम महिला पुलिस अधिकारी किरण बेदी है।	
उद्देश्यकथन :-		
तो बच्चों आज हम किरण बेदी के आत्मकथा सफर लम्बा है मंजिल बाकी है नामक पाठ पढ़ेंगे।		सफर लम्बा है, मंजिल बाकी है।
प्रस्तुतीकरण :-		
आदर्शवाचन :-		
छात्राध्यापिका पाठ		

का आदर्शवाचन उतार-चढ़ाव के साथ प्रस्तुत करती है।	छात्र पाठ का आदर्शवाचन ध्यान पूर्वक सुनते है।	
अनुकरण वाचन:-		
छात्राध्यापिका छात्रों को अनुकरण वाचन करने का आदेश देती है।	छात्र अध्यापिका का अनुकरण करते हुए वाचन करने का प्रयास करता है।	
मौन वाचन:-		
छात्राध्यापिका छात्रों को पाठ का मौन वाचन करने का आदेश देते हुए फलक पर लिखे हुए प्रश्न का उत्तर देना का आदेश देती है।	छात्र पाठ का मौन वाचन करते हुए फलक पर लिखे हुए प्रश्न का उत्तर ढूंढने का प्रयास करते है।	
केन्द्र प्रश्न:-		
1. सफर लम्बा है, मंज़िल बाकी है किसकी रचना है।	'सफर लम्बा है, मंजिल बाकी है' किरण बेदी की रचना है।	'किरण बेदी'
2. अगर आप दुनिया को बदलना चाहते है तो पहले ____ को बदलना ज़रूरी है। (Explanation)	अगर आप दुनिया को बदलना चाहता है तो पहले स्वयं को बदलना ज़रूरी है।	'स्वयं'
पाठ विवेचन:-		
छात्राध्यापिका पाठ भाग में आये कठिन शब्द, व्याकरण कार्य आदि को		

समझाते हुए व्याख्यान, ~~एवं~~ चर्चा, प्रश्नोत्तर आदि के द्वारा पाठ का विवेचन करती है।

परिवर्तन :- बदलाव
(अगर आप व्याख्यान पढ़ते हैं।)
~~प्रथम~~
पहला - प्रथम
अधिकारी - ऑफिसर

परिवर्तन - बदलाव
पहला - प्रथम
अधिकारी - ऑफिसर

व्याख्यात्मक। पाठ वस्तु का विस्तृत व्याख्यान देती है।

किरण बेदी भारत के प्रथम I.P.S officer थी। उनका विचार था कि अगर दुनिया को बदलना चाहता है तो पहले स्वयं को बदलना है। वे पुलिस में भर्ती ~~करने~~ होने वाली सबसे पहली महिला थी।

छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

(दूसरा para पढ़ते हैं।
प्रश्न पूछते हैं।)

1. सामाजिक प्रगति का मूल्यांकन परिपूर्ण करने के लिए क्या करना है?

सामाजिक प्रगति का मूल्यांकन परिपूर्ण करने के लिए स्त्री से सम्बन्धित है इसलिए सबसे पहले स्त्री स्थिति पर नजर डालना है।

2. अगर आप दुनिया को बदलना चाहते है तो पहले स्वयं को बदलना चाहिए' यह किसका कथन है? [Para II]	अगर आप ...... यह कथन किरण बेदी का है।	किरण बेदी
सन 1972 ... पहली महिला		
व्याख्यान :-		
सन 1972 में किरण बेदी को पहली पुलिस अधिकारी का पद मिला। किरण बेदी पहले टेनिस में पूरे एशिया में चाम्पयन घोषित करने वाली महिला थी। पुलिस में भर्ती होने वाली पहली वनिता किरण बेदी ही है।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	
कुछ प्रश्न पूछते है।		
① किरण बेदी को पहली पुलिस अधिकारी का पद कब मिला?	किरण बेदी को पहली पुलिस अधिकारी को पद 1972 मिला।	
② किस खेल में किरण बेदी को एशिया में चाम्पयन घोषित की?	टेनिस खेल में किरण बेदी को एशिया में चाम्पयन घोषित की।	

(2) पुलिस में भर्ती होने वाली पहली महिला पुलिस अधिकारी कौन थे?

पुलिस में भर्ती होने वाली पहली महिला पुलिस अधिकारी किरण बेदी थे।

पुनरवलोकन :-

(1) सफर लम्बा है, मंज़िल बाकी है यह किसकी आत्मकथा है?

सफर लम्बा है, मंज़िल बाकी है यह किरण बेदी की आत्मकथा है।

(2) अर्थ बताइए?
परिवर्तन

बदलाव

(3) वाक्यों में प्रयोग कीजिए?
पहला, परिवर्तन

रामु कक्षा में पहले स्थान आ गया।
समाज में कुछ परिवर्तन लाना अनिवार्य है।

मूल्यांकन :-

(अर्थ लिखिए, पूरा कीजिए, प्रश्न, शुद्ध कीजिए, लिंग बदलो, पर्यायवाची शब्द आदि करके मूल्यांकन करना है।) (Mark the following)

प्रश्न (1) इस पाठ से आपको क्या सन्देश मिलता है?

आत्मविश्वास एवं धैर्य करने से हमें कुछ भी करने के लिए पहुँच ही सक्षम होता है।

पूरा करो :-

1. सन ___ को किरण बेदी को पहली पुलिस अधिकारी का स्थान मिला।	सन 1972 को किरण बेदी को पहली पुलिस अधिकारी का स्थान मिला।	सन 1972 को किरण बेदी को पहली अधिकारी का स्थान मिला।
2. ___ खेल में किरण बेदी को पूरे एशिया में चाम्पियनशिप मिला।	टेनिस खेल में बेदी को पूरे एशिया में चाम्पियनशिप मिला।	टेनिस खेल में बेदी को पूरे एशिया में चाम्पियनशिप मिला।
गृहकार्य :- भारत में विशिष्ट पद रखनेवाली महिलाओं का नाम और पद लिखकर आइए।	छात्र अपने पुस्तिका में गृहकार्य लिखते है।	भारत में विशिष्ट पद रखनेवाली महिलाओं का नाम और पद लिखकर आइए

पद्य शिक्षण

सामान्य उद्देश्य :- कविता के प्रति छात्रों को रुचि उत्पन्न करना।
कविता पढ़ने के लिए उनको प्रेरणा देना।
आस्वादन करने की क्षमता बढ़ाना।

विशिष्ट उद्देश्य : कविता के सन्देश को छात्रों को समझाना।

<u>आदर्श पारायण</u> :- (आदर्श वाचन के बदले) छात्राध्यापिका ताल और लय के साथ पाठ का आस्वादन करते है।	ध्यान पूर्वक सुनते है और आस्वादन करते है।	
<u>अनुकरण पारायण</u> :- छात्राध्यापिका छात्रों को अनुकरण पारायण करने का आदेश देते है।	छात्र अनुकरण पारायण के लिए कोशिश करता है।	
<u>मौन पारायण</u> :- ~~[illegible]~~		

भाषा शिक्षण की पद्धतियाँ अथवा विधियाँ

कोई भी विषय पढ़ाने के लिए विषय - सामग्री एवं शिक्षक की आवश्यक होती है। परन्तु शिक्षक का काम बिना विधि अथवा पद्धति के नहीं चल सकता। हिन्दी भाषा शिक्षण की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित प्रकार से मानी जाती है।

(स्वाभाविक, वार्तालाप विधि)

1. प्रत्यक्ष विधि पद्धति (direct method)

इस पद्धति का अर्थ है, जिस ढंग से बालक अपना मातृभाषा सीखता है उसी तरह बालक एक नवीन भाषा सीखता है। इसके द्वारा बिना मातृभाषा का प्रयोग किये हुए सीधे एक नयी भाषा की शिक्षा दी जाती है। और उसका माध्यम संभाषण होता है। इसलिए इसे संभाषण पद्धति भी कहते है। इसका और एक नाम भी है, प्राकृतिक पद्धति।

इस पद्धति का उपयोग प्रथमत: पामर और फ्रीज ने अंग्रेजी भाषा शिक्षण में बडी सफलता के साथ किया। इस पद्धति में भाषा की पढ़ाई वार्तालाप द्वारा आरंभ होती है। जैसे किसी वस्तु दिखाकर

यह क्या है ? कैसे पूछते है ?

1/12/2013 प्रत्यक्ष पद्धति के गुण

① भाषा शिक्षण वार्तालाप से शुरु होने के कारण छात्र यथा संभव भाषा का उच्चारण शुद्ध रूप से कर सकते है।

② इस पद्धति से सीखने पर छात्र भाषा और इसके साहित्य का रसास्वादन कर सकता है।

③ कक्षा में बालक भाषा का प्रत्यक्ष व्यवहार करना सीखता है। जिसका उपयोग दैनिक जीवन में होता है। यहाँ मातृभाषा की किसी भी प्रकार से कठिनाई नहीं निर्माण होती।

④ यहाँ व्याकरण को कम महत्व दिया जाता है।

दोष

10/12/2013

1. इस विधि में अभ्यास बहुत ज्यादा करना पड़ता है।
2. इसमें व्याकरण की उपेक्षा की गयी है।
3. भाषा सीखने में कृत्रिमता आ जाती है।
4. वार्तालाप की प्रधानता है लेकिन लेखन की उपेक्षा है की गयी है।
5. इसका उपयोग कुशल और प्रशिक्षित अध्यापक ही कर सकता है।
6. विषयवस्तु को छात्र ठीक तरह से समझ नहीं पायेंगे।

परोक्षविधि (व्याकरण अनुवाद विधि)

इस विधि से या विधि से किसी भी नवीन भाषा को मातृभाषा के माध्यम द्वारा सिखाया जाता है। छात्रों को व्याकरण के नियम पहले ही सिखाया जाते है। और उसी की सहायता से दूसरी भाषा सिखाया जाता है। नवीन भाषा में लिखी गयी किसी बात का अनुवाद अपने मातृभाषा में

करें और अपनी मातृभाषा में की गयी बात का अनुवाद नई भाषा में करें। इस पद्धति में जिस भाषा में अनुवाद करना है उस भाषा का व्याकरण का ज्ञान होना अनिवार्य है। नई भाषा सीखने के लिए इस पद्धति का उपयोग बड़ी मात्रा में किया जा रहा है।

परोक्ष विधि/ या अनुवाद विधि/ या व्याकरणिक विधि के गुण

① ज्ञात से अज्ञात की ओर, शिक्षण सूत्र के आधार पर यह पद्धति निर्मित है।

② बालक को अन्य भाषा की वाक्य रचना एवं बनावट समझने में मदद मिलती है।

③ विषयवस्तु को समझने में बहुत कम समय लगते है।

④ अध्यापकों के लिए पाठ पढ़ाना सरल हो जाता है।

⑤ अनुवाद एक कला है उसे प्राप्त करने के लिए कम से कम दो भाषाओं की पर्याप्त जानकारी रखनी है। इसकी पूर्ति इस पद्धति से हो जाती है इस विधि में सोचने निरीक्षण करने • प्रयोग करने और विचार करने की शक्तियाँ अच्छी तरह से विकसित हो जाती है।

⑥ अनुवाद का कार्य रोचक होता है सीखने वालों को तुरन्त अपने सफलता का ज्ञान होता है।

परोक्ष विधि के दोष

① भाषा को स्वाभाविक रूप से सुनने का हम अवसर मिलता है। इसलिए छात्र भाषा बोलने की क्षमता प्राप्त नहीं कर सकता।

② यह पद्धति अवास्तविक है क्योंकि दोनों भाषाओं की प्रकृति तथा शब्द समान नहीं होते हैं। (दोबार)

③ इसमें दोहरी मानसिक क्रियायें होती है। और मनु[illegible] के सोचने पर बड़ा दबाव पड़ता है।

④ शाब्दिक अनुवाद भाषा सौन्दर्य को नष्ट करता है।

⑤ इस पद्धति में अध्यापक का स्थान कम होता है।

शब्द परिवर्तन पद्धति (The substitution Method)

नई भाषा के सीखने समय सभी स्थानों पर अनुवाद तथा प्रत्यक्ष पद्धति का उपयोग नहीं कर सकते है। इसलिए अन्य किसी पद्धति को अपनाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में शब्द परिवर्तन पद्धति बहुत ही उपयुक्त है। एक वाक्य के एक या अधिक शब्दों का परिवर्तन करके उन सब वाक्यों के अभ्यास द्वारा भाषा की आदतें बनाने

क्रम को शब्द परिवर्तन कहा जाता है।
जैसे
मुझे स्कूल जाना चाहिए।
इस वाक्य में चार शब्द है। इनमें कोई एक शब्द का मूलाधार बनकर रहेंगा। शेष शब्दों को हम बदल सकते है। जैसे - चाहिए शब्द स्थिर रहेंगा। मुझे के बदले उसे, उन्हें, आपको, हमें आदि शब्द का प्रयोग किया जाता है। जाने के बदले आना, जाना, चलना पहुँचना आदि। आदर्शवाक्य को श्यामपट्ट पर लिख प्रत्यक्ष छात्रों को दिखाते है व समझाने की कोशिश करते है। और अध्यापक के आदेशानुसार छात्र वाक्य में परिवर्तन करते है। इस विधि को आदेश विधि के नाम पर भी जाने जाते हैं।

शब्द परिवर्तन विधि के गुण

7/1/2013

1. छात्रों को पूरे वाक्यों को बोलने का शिक्षण प्राप्त होता है।
2. कक्षा में संभाषण जैसा वातावरण तैयार होता है।
3. इससे बालक सही उच्चारण भी सीखते है।
4. मातृभाषा द्वारा अर्थ ग्रहण करना सरल बनता है।
5. बोलने के साथ ही लिखने और पढने का शिक्षण भी साथ -साथ प्रस्तुत किया जाता है।

शब्द परिवर्तन विधि के दोष

1. भाषा की आदतें बनाने में अधिक समय लगता है।

② वाक्यों का शिक्षण तो इस पद्धति से होता है। लेकिन गद्य, पद्य, व्याकरण, आदि का शिक्षण क्रम से नहीं हो पाता है।

③ किसी गद्य पाठ के बीच में इस प्रकार शब्द परिवर्तन को अपनाये जाय तो पाठ का क्रम टूट जाता है।

④ आदेश देने लायक शब्द तथा वाक्यांश हर समय ढूँढना कठिन होता है।

8/1/2014

संरचना विधि (Structural method)
(नवीन विधि) (डॉ. वेस्ट विधि)

इस पद्धति के निर्माता डॉ. मैकिल वेस्ट थे। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षण में प्रयत्न विधि का उपयोग किया तथा स्वयं अंग्रेजी पढ़ने की पद्धति का आविष्कार किया। जो वेस्ट विधि या नवीन पद्धति के नाम से जाने जाते है। वेस्ट विधि के सिद्धान्त निम्न लिखित है।

① भाषा शिक्षण में वाचन की प्रधानता

वेस्ट के अनुसार भाषा शिक्षण का आरंभ वाचन से किया जाना चाहिए। किसी भाषा में निपुण होने के लिए आवश्यक है कि शब्द भण्डार का विकास किया जाय। वाचन के द्वारा बालक नये-नये शब्दों को सीखता है। जिससे उसके शब्द भण्डार का विकास होता है। वाचन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वेस्ट ने कहा है कि "वाचन

से बालक सरलता से नवीन भाषा सीख जाता है। तथा ~~अब~~ आगे चलकर लिखने में निपुण हो जाता है।

② विभिन्न पद्धतियाँ

उनके अनुसार वाचन, लेखन तथा भाषण सीखने के लिए अलग अलग पद्धतियों का उपयोग किया जाय। किसी पाठ को पढ़ाते समय एक साथ ही तीनों का अभ्यास करना अनुचित है।

③ मातृभाषा का महत्व

वेस्ट नवीन भाषा के शिक्षण में मातृभाषा की उपयोग को उचित समझते हैं। उनके विचार में नवीन भाषा के शब्दों का ज्ञान कराने के लिए अनुवाद को भी स्थान मिलना चाहिए।

~~[illegible]~~ वेस्ट की इस पद्धति इस सीमा तक उपयोगी सिद्ध हुए कि अंग्रेजी भाषा का शिक्षण भारतीय अध्यापकों के लिए जिस पद्धति द्वारा ~~[illegible]~~ अत्यन्त सुलभ हो गया है। इस पद्धति में अनेक ~~[illegible]~~ दोष भी है। वेस्ट का यह विचार भ्रामक है कि साधारण छात्र वाचन की शिक्षा प्राप्त करें। वाचन, लेखन, एवं भाषण तीनों परस्पर एक दूसरे से संबंधित है। इसको अलग-अलग करके पढ़ाना पूर्णत: अमनोवैज्ञानिक है।

द्विभाषी पद्धति (Bi lingual Method)

नवीन भाषा सीखते समय अध्ययन अध्यापन पद्धति में जहाँ दो भाषाओं का उपयोग किया जाता है। जैसे मातृभाषा और

सीखने की दूसरी भाषा। इसे द्विभाषिक पद्धति कहते है। इस पद्धति दोनों भाषाओं की समानता और विषमताओं पर स्थित है। यहाँ प्रसंग, उच्चारण, शब्द - संग्रह, गठन आदि में समानताओं और विषमताओं पर ही विचार किया जाता है।

अगर समानता तथा विविधता एक बार मालुम हो जाएगी तो दूसरी भाषा सीखना आसान हो जाता है। इस विधि के समर्थकों का विश्वास है कि जिस पद्धति से भाषा सीखना सिर्फ ~~समय~~ समय व्यर्थ करना है। केवल कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते समय शिक्षक द्वारा ही इस विधि में मातृभाषा का उपयोग किया जाना चाहिए।

द्विभाषी पद्धति के गुण

1. मातृभाषा के उपयोग से काफी समय बचता है।
2. सीखने वाला विषयवस्तु को अच्छी तरह से समझ लेता है।
3. इस पद्धति द्वारा सीखने में किसी विशेष उपकरण तथा सुविधाओं की जरूरत नहीं है।
4. अंग्रेजी के शिक्षक इस पद्धति को अच्छी तरह से अपनाते है।

द्विभाषी पद्धति के दोष

1. दो भाषाओं के संबंध स्पष्ट करते समय गलतियों की संभावना रहती है।

16/1/2014

भाषा का पूर्ण अधिकार

यह सतत अभ्यास व सही भाषा ~~का~~ आदतों का परिणाम होता है। बालकों में स्वाभाविक अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण बहुत वैसे ही बोलने और लिखने लगता है। जैसे कि ~~[illegible]~~ उनके शिक्षक बोलते, लिखते तथा पढ़ते समय प्रत्येक शिक्षक को सतर्क रहना चाहिए।

भाषा सीखने के प्रति अभिरुचि

किसी भाषा को सीखने के लिए उस भाषा के प्रति अभिरुचि होनी चाहिए। जब तक अभिरुचि पैदा नहीं होती

तब तक विद्यार्थी का मन उस भाषा की ओर आकृष्ट नहीं होगा।

सुनना, समझना, बोलना, पढ़ना, लिखना (क्षमताओं) आदि का महत्व है।

भाषा प्रयोग एक कौशल है। इसलिए चारों क्षमताओं का विकास अत्यन्त आवश्यक है। भाषा कौशल केवल एक या दो क्षमताओं तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें चारों क्षमताओं का सम्मिलित महत्व है।

7/1/14 चारों कौशलों का क्रम

मातृभाषा सीखते समय स्वाभाविक क्रम को ही अपनाया लिया है। जैसे - सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना। यदि हम किसी बालक का भाषा विकास देखते है तो उसके सीखने का क्रम सही होता है। बच्चा प्रारम्भिक अवस्था में भाषा सुनता है। मौखिक रूप से भाषा से परिचित होता है। और धीरे - धीरे समझने का प्रयास करता है। अतः सुनने एवं बोलने का क्रम तीन - चार साल तक चलता रहता है। फिर पुस्तक पढ़ना लिखना सीख जाता है। अतः मातृभाषा का अध्ययन के लिए स्वाभाविक क्रम को अपना लिया जाता है। देखा जाय तो यह क्रम सरल से जटिल सूत्र पर आधारित है।

भाषा सीखने के प्रमुख अंग

भाषा शिक्षण को विद्यार्थियों के भौतिक एवं मानसिक विकास के

अनुसार भाषा शिक्षण का कार्यक्रम रचना चाहिए। सीखने का स्वाभाविक क्रम और मनोवैज्ञानिक क्रम है, सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। बालक के अन्दर भाषा सीखने की एक स्वाभाविक प्रकृति होती है। अतः भाषा स्वाभाविक विधि से सिखायी जाती है।

18/11/14

भाषा के कौशल

1. सुनना (श्रवण)
2. बोलना (भाषण)
3. पढ़ना (वाचन)
4. लिखना (लेखन)

सुनना (श्रवण कौशल)

उच्चरित रूप में भाषा का जो व्यवहार होता है उसके दो पक्ष है - ग्रहण पक्ष

और अभिव्यक्ति पक्ष जिन्हें हम सुनना और बोलना कहते हैं। श्रवण कौशल भाषा सीखने का प्रथम चरण है। और यह अन्य कौशलों का आधार भी है। किसी भी व्यक्ति के द्वारा उच्चरित शब्दों एवं भावों को कानों के माध्यम से ग्रहण कर उसका अर्थ ग्रहण करने की क्रिया श्रवण या सुनना कही जाती है।

श्रवण कौशल का विकास करने का उपाय या विधियाँ

23/11

मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए अध्यापक निम्नलिखित शिक्षण विधियों का उपयोग कर सकता है।

1. वार्तालाप
2. प्रश्नोत्तर
3. सस्वरवाचन
4. वाद - विवाद
5. भाषण
6. चित्र - वर्णन
7. कहानी सुनाना या सुनना
8. सत्संग
9. कविता पाठ

वाचन ज्ञानार्जन की कुंजी

वाचन एक कला, कौशल है। पुस्तक का वाचन केवल पढ़ना मात्र नहीं बल्कि पढ़कर उसे समझना, उसका अर्थ ग्रहण करना आदि ही है। भाषा शिक्षण में वाचन का अत्यंत अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वाचन ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ आनंद आनन्द प्राप्ति का साधन है। वाचन मनोरंजन का भी एक सशक्त साधन है।

वाचन का अर्थ

वाचन वह जटिल सीखने की प्रक्रिया है जिसमें सुनने के गतिवादी माध्यमों

को मानसिक संबंध होता हैं
पक्षों से

वाचन की आवश्यकता एवं महत्व

जीवन की अधिकांश परिस्थितियों में वाचन का प्रयोग किया जाता है। जहाँ इसकी आवश्यकता एवं महत्व का विवेचन इस प्रकार किया जाता है।

① वाचन व्यक्तित्व के विकास का सर्वोच्च साधन है।

② दिन प्रतिदिन जीवन एवं व्यवहार में वाचन का विशेष महत्व है।

③ लिखित भाषा को सीखने के लिए वाचन का विशेष महत्व है। बिना वाचन से ~~वाचन~~ भाषा का ~~महत्व~~ विकास नहीं होता।

④ वाचन में हाव भाव, आरोह -अवरोह, वाणी की मधुरता शुद्धता, शब्दों का उच्चारण, बोल की गति तथा मुह मुद्राओं का विशेष महत्व है। इनसे संप्रेषण में एक अद्भुत शक्ति, सजीवता और स्वच्छता प्राप्त होती है।

⑤ वाचन अर्थात् वाणी आत्मप्रकाशन की साधन नहीं है। इसके द्वारा अंतरात्मा का उद्घोषण उद्बोधन होता है। वाणी के माध्यम से व्यक्ति अपने प्रकृति में सुधार ला सकता है। जॉन ड्यूवी ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सामाजिक क्षमता है। यह दक्षता बहुत कुछ भावों और विचारों के मौखिक प्रकाश पर निर्भर है।

27/11/14

वाचन शिक्षण के उद्देश्य

① बालकों को स्वर के उतार-चढ़ाव का ऐसा अभ्यास कराया जायेगी वह गद्य, नाटक आदि का वाचन अपने भावों के अनुकूल कर सके।

② छात्रों को शब्द, ध्वनि शब्दों का उच्चारण आदि का सही प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया ~~जाय~~ जाय

③ वाचन करते समय व्याकरण की दृष्टि से भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

④ भाव एवं विचारों तथा विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण में सशक्त भाषा का प्रयोग किया जाय।

⑤ प्रकरण एवं भाव के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग किया जाए।

⑥ वाचन में मौलिकता एवं मधुरता और शीलता का समावेश होना चाहिए।

⑦ रूढ़ वाचन नहीं किया जाना चाहिए।

वाचन शिक्षण की प्रणालियाँ, विधियाँ पद्धतियाँ

1. सस्वर वाचन

2. मौन वाचन

सस्वर वाचन

लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को सस्वर पाठ या सस्वर वाचन कहते है।

स्वर सहित वाचन को सस्वर वाचन कहा जाता है। इसमें छात्र पढ़ते के साथ बोलता भी जाता है। इसमें चार प्रतिक्रियायें सम्मिलित है। लिपिबद्ध अक्षरों को देखना, पहचानना, शब्दों को समझना एवं उच्चारण करना तथा अर्थ ग्रहण करना।

IM सस्वर वाचन करते समय ध्यान रखने योग्य बातें या सावधानियाँ

1. सस्वर वाचन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी ध्वनियों का स्पष्ट उच्चारण करें।

2. जो शिक्षक या विद्यार्थी सस्वर वाचन करते हैं करें उनकी आवाज़ संपूर्ण कक्षा में सुनाई दें।

3. सस्वर वाचन में स्वर सदैव एक जैसा नहीं होना चाहिए बल्कि स्वर में उतार चढ़ाव आरोह अवरोह होना चाहिए। इसमें ये भावों के अनुकूल भी होना चाहिए।

4. जब शिक्षक सस्वर पाठ करें उस समय

वह बीच - बीच में मुँह उठाकर सामने बैठे विद्यार्थियों की ओर देख सके।

(5) विद्यार्थी सस्वर पाठ में जो भूलें करें उन भूलों का समाधान शिक्षक को अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से और अपने आदर्श पाठ द्वारा करना चाहिए। (6) शिक्षक को सस्वर पाठ के लिए छात्रों को चुनते समय कक्षा के बीच से किसी भी विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए कहना चाहिए। विद्यार्थियों को सीधे खड़े होकर ही सस्वर वाचन करना चाहिए। वाचन स्पष्ट होना चाहिए।

(7) वाचन करते समय उच्चारण की शुद्धता पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(8) वाचन करते समय शब्दों का अर्थ ग्रहण करके चलना है।

(9) वाचन करते समय मधुरता के साथ सरल ढंग से शब्दों का उच्चारण किया जाना चाहिए।

6/2/14

सस्वर वाचन के उद्देश्य

(1) छात्रों को वाक्य रचना का ज्ञान कराना तथा उन्हें विभिन्न लेखन शैलियों से अवगत कराना।

(2) छात्रों को गद्य का स्पष्ट उच्चारण शुद्ध शब्द तथा प्रवाह के साथ सस्वर वाचन के लिए प्रशिक्षित कराना।

③ छात्रों को लिखित सामग्री के केन्द्रीय भाव को ग्रहण करने और उसकी समीक्षा करने में प्रशिक्षित करना।

④ छात्रों को कविता का लय और ताल के साथ परायण करने के लिए प्रशिक्षित करना।

⑤ छात्रों को लिपि का स्पष्ट ज्ञान कराना।

⑥ सस्वर वाचन के प्रकार

सस्वर वाचन दो प्रकार के माने जाते है।

1. अध्यापक द्वारा आदर्शवाचन
2. छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन

अध्यापक द्वारा आदर्शवाचन

जब पाठ के सामग्री को अध्यापक स्वयं वाचन करके छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करते है तो उसे आदर्श वाचन कहते है।

आदर्श वाचन के उद्देश्य

1. छात्रों का अपरिचित पाठ्य सामग्री का परिचय देना।
2. छात्रों के समक्ष वाचन का एक मानदण्ड (standard) प्रस्तुत करना।
3. छात्रों को समझाना है कि उन्हें कहाँ तक पढ़ना है

4. छात्रों में हिचक और संकोच की भावना को दूर करना।

5. छात्रों को उचित उच्चारण, गति, लय, विराम, स्पष्टता आदि का ध्यान रखते हुए वाचन करने की प्रेरणा उत्पन्न प्रदान करना।

7/2/14

छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन

आदर्श वाचन के पश्चात् छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किया जाता है। जब छात्र अध्यापक के आदर्श पाठ के अनुरूप वाचन करने का प्रयत्न करते है तो उसे अनुकरण वाचन कहते है।

छात्रों की ओर से अनुकरण वाचन लेते समय अध्यापक को इस बात का भी ध्यान चाहिए कि वह कक्षा के समस्त छात्रों को एक साथ अनुकरण वाचन करने का आदेश न दे। बल्कि एक-एक करके कई छात्रों को अनुकरण वाचन करने का आदेश दे।

1. सामूहिक वाचन छोटी कक्षाओं में लाभदायक सिद्ध होता है। कक्षा सात या आठ तक इसका प्रयोग सफलता के साथ किया जा सकता है।

2. सामूहिक वाचन बालों के उच्चारण को शुद्ध करने के लिए जब भी प्रयोग में लाया जाय तो बालकों की उच्चारण की शुद्धता की ओर आवश्य ध्यान दिया जाए।

3. सामूहिक रूप से यदि कविता का वाचन कराया जाय तो भावों के उतार चढ़ाव के साथ साथ अंकों का संचालन भी किया जा सकता है।

मौन वाचन

मौन वाचन का अर्थ

मौन वाचन का स्थूल रूप से अर्थ है बिना होंठ हिलाये चुप चाप पढ़ना। परन्तु सूक्ष्म रूप में मौन वाचन का अर्थ चुप चाप पढ़ते हुए अधिक से अधिक स्पष्ट अर्थ ग्रहण करना।

भाव उनकी समझ में ठीक प्रकार से नहीं आ पायेगा।

12/2/14 एकाग्रता

* मौन वाचन के समस्त उद्देश्य उस समय ही पूर्ण हो सकती है जब बालक एकाग्रत चित्त से मौन वाचन करें।

* उचित प्रवाह तथा गति का ज्ञान अध्यापक बालकों को बताइए कि मौन वाचन करते समय वह विराम चिह्नों गति और प्रवाह का मन ही मन अवश्य ज्ञान रखें।

मौन वाचन के उद्देश्य

① छात्रों को मौन वाचन का अभ्यास इसलिए कराते है ताकि वे कम से कम समय में

अधिक से अधिक सामग्री को आत्मसात
(2) छात्रों की बोध शक्ति को विकसित करना जिससे वे पढ़े गये विषयों को भली प्रकार समझकर उसका यथास्थान प्रयोग कर सके। बालकों की मनन तथा तार्किक शक्ति का विकास करना। छात्रों में अधिक से अधिक साहित्यिक रुचि उत्पन्न करना।

मौनवाचन का महत्व -

मौन वाचन द्वारा बालक शीघ्रता से पाठ पढ़ सकता है। मौन वाचन में थकावट नहीं आती। फलस्वरूप अधिक मात्रा में पढ़ सकता है मौन वाचन में पढ़ने के साथ - साथ विषय को आत्मसात भी कर सकते है। स्वअध्याय के लिए मौनवाचन अधिक उत्तम है। सार्वजनिक स्थानों पर मौनवाचन का ही सहारा ले सकता है।

मौनवाचन के महत्व पर प्रकाश डालते समय श्राइन लिखते है - " "इनमें कोई सन्देह नहीं है कि मौनवाचन में ही अल्प व्ययता है। साथ ही यह पद्धति हमारे जीवन की प्रतिदिन के क्रियाओं के लिए भी सबसे उत्तम कही जा सकती है। क्योंकि हमारा अधिकांश वाचन मौन रूप से होता है।

13/2/2014

मौन वाचन का प्रारंभिक या प्राथमिक स्तर पर प्रयोग करना पूर्णतया अनुचित है। इस स्तर पर तो सस्वर वाचन ही उपयुक्त रहता है। मौन वाचन का आरंभ आठवीं कक्षा से ही करना अनिवार्य है। कविता पाठ सदा सस्वर वाचन में होता है।

मौनवाचन के प्रकार

मौन वाचन के दो प्रकार माने जाते है। गम्भीर मौन वाचन, त्वरित मौन वाचन। (द्रुत)

गम्भीर मौन वाचन

गम्भीर मौन वाचन का अर्थ प्रत्येक शब्द, वाक्य तथा भाव पर गम्भीरता पूर्वक विचार या मनन करना है। अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों को गम्भीर मौन वाचन के लिए निम्न-लिखित नियमों को समझा दे।

① वाचन का प्रयोजन सदैव दृष्टि में रखना चाहिए।

② प्रत्येक अनुच्छेद के केन्द्रीय विचार को दृढ़ता से ग्रहण करते चलना चाहिए।

③ वाचन करते समय अपनी चिन्तन प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए प्राचीन एवं नवीन जानकारी के समन्वय के आधार पर आवश्यक परिणाम निकालकर चलना चाहिए।

(4) पढ़े हुए अंश पर टिप्पणियाँ लिखते चलना चाहिए।

14/2/14 त्वरित मौन वाचन (द्रुत)

त्वरित मौन वाचन का उद्देश्य विशेष रूप से मनोरंजन की प्राप्ति है। पुस्तकालय तथा घर पर विविध पत्र पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों का पढ़ना इस प्रकार के मौन वाचन के अन्तर्गत आता है।

~~त्वरित~~ मौन वाचन के गुण (लाभ)

मौन वाचन में सस्वर वाचन से बहुत अधिक पढ़ा जा सकता है। बालक में कम समय में अधिक पढ़ने की आदत पड़ जाती है। मौन वाचन में केवल मस्तिष्क और आँखें पर बल पड़ता है। ज्ञानेंद्रिय शान्त रूप से कार्य करती है। अतः मौन वाचन (पाठ) पढ़ने का व सबसे सरल रूप है जिसमें मानसिक शक्ति का व्यय है।

मौन वाचन में बालक स्वयं समझकर पढ़ने का प्रयत्न करता है। अतः उसमें स्वावलंबन की प्रवृत्ति पैदा होता है। उसमें स्वयं पढ़ने, सोचने विचार करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

विशेष रूप से विचारात्मक लेखों को पढ़ने के लिए मौन वाचन करना बहुत आवश्यक है क्योंकि सस्वर पाठ से लम्बे, गंभीर और मननीय लेखों का

पढ़कर समझना या आनन्द प्राप्त करना कठिन कार्य है। मौन पाठ के द्वारा पाठ्य विषय का अध्ययन भी हो जाता है तथा आनन्द भी हो जाता है।

मौन वाचन का संचालन

कक्षा में मौन वाचन का संचालन करते समय अध्यापकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखनी चाहिए।

1. छात्र मौन वाचन करते समय बिलकुल ही आवाज नहीं करें। न ही होंठ हिलायें, न ही गुनगुनाएँ। कक्षा का वातावरण शान्त रहे। रायबर्न के अनुसार मौन पाठ के प्रारंभ से ही इस तथ्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए कि वाचन पूर्ण रूप से मौन हो। इसमें गुनगुनाहट न हो। इस बात के लिए बालकों को प्रारंभ से ही प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि वह स्वयं के लिए पढ़ रहे हो, तब न तो उसके होंठ हिलें, और न ही वे शब्दों को उच्चारित करें। अन्यथा मौन पाठ एक प्रकार से संशोधित रूप में सस्वर पाठ ही होगा। और इस प्रकार छात्र अपने नेत्रों से पढ़ना कभी नहीं सीख नहीं पायेंगे।"

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952 के अनुसार "मूल्यांकन एक प्रमुख साधन है। जिसके द्वारा समाज इस बात का पता लगाता है कि विद्यालय अपने दायित्वों को उचित प्रकार से पूरा कर रहे हैं। और विद्यालय में अध्ययन करने वाले बच्चों को उचित प्रकार की शिक्षा मिल रही है। और वह आपेक्षित स्तरों को प्राप्त कर रहे हैं।"

जेम्स एम. ई. के अनुसार "मूल्यांकन विद्यालय, कक्षा तथा सहयोग के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के संबंध में छात्रों की प्रगति की जाँच है। मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन छात्रों को सीखने की प्रक्रिया को अग्रसर एवं निर्देशित (direction) करना है। इस प्रकार मूल्यांकन एक नकारात्मक प्रक्रिया न होकर सकारात्मक प्रक्रिया है।"

मूल्यांकन के उद्देश्य

1. मूल्यांकन के द्वारा यदि याद किया जा सकता है कि पूर्वनिर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किसी सीमा तक नहीं हुई है।
2. विद्यार्थियों की कठिनाईयों, कमियों तथा गुणों की जानकारी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना।
3. विद्यार्थियों के सामान्य विकास को गतिशील बनाये रखने के लिए सहायता प्रदान करना।

(4) आवश्यकता के अनुसार सफलता की मात्रा के आधार पर, पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक कार्य में परिवर्तन करना।

(5) शिक्षा की के उद्देश्यों को स्पष्ट करके उनकी उपयुक्तता की जाँच करना।

(6) निर्देशन के लिए अवसर प्रदान करना।

28/2/2014

निबन्धात्मक परीक्षा

निश्चित समय में निर्दिष्ट क्रम पर पूछे गये कई महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर निबंध के स्वरूप में लिखने को ही निबन्धात्मक परीक्षा कहते है। निबन्धात्मक परीक्षा में लघुउत्तरों की आशा नहीं रहती है। इसकी सहायता से विद्यार्थियों के विचारों को विश्लेषण करने, प्राप्त ज्ञान का प्रयोग करने विचारों को व्यक्त करने की योग्यता की जाँच किया जाती है। आज की परीक्षा प्रणाली में उच्च कक्षाओं के लिए इस पद्धति का उपयोग किया जाता है। निबंधात्मक परीक्षा के सहायता से विभिन्न मानसिक शक्तियों का विकास होता है। बालकों को अपनी भावाभिव्यक्ति में कुशल बनाने में सहायता मिलती है।

निबंधात्मक परीक्षा के गुण

① विद्यार्थी लेखन में कुशल बनते हैं।

② निबन्धात्मक परीक्षा पाठ्यवस्तु के विस्तृत पक्षों का वर्णन करने उनपर तार्किक क्रम से निबन्ध लिखने उसको आत्मसात करने उसकी आलोचना तथा मूल्यांकन की योग्यता की जाँच करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

③ निबन्धात्मक परीक्षा शिक्षक को यह जानने में सहायता प्रदान करती है कि विद्यार्थियाँ अपने विचारों को स्पष्ट तथा शुद्ध भाषा प्रकट कर सकता है (या नहीं) ④ निबंधात्मक परीक्षा में विद्यार्थियों को प्रश्नों की उत्तर देने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

3/3/2019

निबंधात्मक परीक्षा के दोष

① निबंधात्मक परीक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान की जाँच कर पाती है। इसके द्वारा सभी वैयक्तिक पहलुओं की जाँच नहीं हो पाती।

② इस परीक्षा के द्वारा पाठ्यक्रम की संपूर्ण विषयवस्तु के बहुत कम भाग का प्रतिनिधित्व किया जाता है।

③ इस परीक्षा के कारण शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य केवल परीक्षा में पास होना रह गया है।

④ इस परीक्षा का विशेष योग विद्यार्थियों का नैतिक स्तर पर गिराने में रहा है।

(8) विद्यार्थी परीक्षा में पास होने के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग करते है।

निबन्धात्मक परीक्षा प्रणाली में सुधार के उपाय

वर्तमान परीक्षा प्रणाली के दोषों को दूर करने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए सुझाव निम्न लिखित है।

(1) विद्यार्थियों को प्रश्न में से अपनी इच्छा के अनुसार प्रश्न छाँटने की स्वतंत्रता नही देनी चाहिए। बल्कि विद्यार्थियों से सभी प्रश्नों का हल करवाना चाहिए।

(2) उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में लिखित परीक्षाओं के साथ ही साथ मौखिक परीक्षाओं को स्थान मिलना चाहिए।

(3) उत्तरों का अंकन उसी परीक्षक द्वारा किया जाय जिसने प्रश्न पत्र बनाया है।

(4) प्रश्न पत्र का निर्माण संपूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।

लघुउत्तरात्मक परीक्षा

जिन प्रश्नों का उत्तर लघु होता है ऐसी परीक्षा को लघुउत्तरा

त्मक परीक्षा कहते है। और इनमें विश्वसनीयता ज्यादा होती है। आजकल इनका प्रयोग साधारण तौर पर हो रहा है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षा

आधुनिक शिक्षाप्रणाली में वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसी परीक्षाओं में पूर्णत: विश्वसनीयता होती है। विद्यार्थियों का ज्ञान, बोध एवं स्मृति का परीक्षण इस परीक्षा से किया जाता है। पाठ्यक्रम अधिकांश भाग को वस्तुनिष्ठ परीक्षा में सम्मिलित किया जाता है। यह प्रणाली अत्यंत उपयुक्त है क्योंकि इन प्रश्नों का उत्तर निश्चित एवं संक्षिप्त होता है। इनका उत्तर देने में विद्यार्थियों को अधिक समय नहीं लगता।

~~स्मृति का परीक्षण~~

5/3/2019 दोष

① इन परीक्षाओं के निर्माण में अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। तथा इसका निर्माण में अधिक समय लगता है।

② इन परीक्षाओं के द्वारा विद्यार्थियों की मौलिक चिन्तन तार्किक और विश्लेषणात्मक शक्तियों की जाँच नहीं हो पाती है।

③ इन परीक्षाओं के द्वारा केवल तथ्यात्मक ज्ञान पर भी अधिक ~~बल~~ जोर दिया जाता है।

आन्तरिक परीक्षा (Internal exam)

आन्तरिक परीक्षा के अन्तर्गत मूल्यांकन की समस्त प्रविधियों को अपनाया जाना चाहिए। अर्थात छात्रों द्वारा किए गए समस्त कार्यों का मूल्यांकन किया जाय। इसमें कक्षा-कक्ष में छात्रों का कार्य एवं व्यवहार, गृहकार्य, उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच, पाठ सहगामी क्रियाओं में उनकी सहभागिता आदि समस्त कार्यों का मूल्यांकन किया जाय।

बाह्य परीक्षा

बाह्य मूल्यांकन हेतु प्रश्न पत्रों के निर्माण, प्रश्नों की संरचना

और परीक्षक्षा का चयन के प्रति विशेष जागरूक होने की आवश्यकता है।

परीक्षा के प्रकार

① सप्ताहिक परीक्षा
② मासिक परीक्षा
③ त्रैमासिक परीक्षा
④ अर्ध वार्षिक परीक्षा
⑤ वार्षिक परीक्षा

(8) छात्रों का निरीक्षण बोध एवं विवेचन शक्ति को विकसित करना।

(9) छोटी तथा कठिन बातों को सरल बनाकर सुनाना।

(10) कहानी के द्वारा उन्हें यथार्थ एवं आदर्श जीवन से परिचित कराना।

सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार कहानी का प्रमुख उद्देश्य आनन्द देना है। जिस प्रकार गंगा स्नान करने वाले भक्त का मुख्य उद्देश्य गंगा स्नान करना होता है। किन्तु इसके साथ साथ उसे देवदर्शन भी मिल जाता है। उसी प्रकार पाठशालाओं में कहानी सुनाने का प्रधान उद्देश्य तो आनन्द देना है। भले ही उसमें रीति, व्यवहार शिष्टाचार आदि के उपदेश निकल आवें और छात्रों को प्रभावित करें।

10/3/2014

(1) 'कहानी एक कला है' इसकी संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

(2) कहानी कहने में किन सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए?

(3)

कहानी कहना एक कला है।

कहानी सुनाना एक कलापूर्ण कार्य। आनन्द जिससे मिलते है वह कला है। इसलिए यदि आप कहानी सुनकर आनन्द उत्पन्न करते तो वह कला है और उसके साथ वही व्यवहार होना है चाहिए कि वह अन्य कलाओं के साथ होता है या हो सकता है।

इसप्रकार हम देखते है कि कहानी एक कला है और उसका शिक्षण में प्रमुख स्थान है। अत: प्रत्येक अध्यापक का कर्तव्य है कि वह कहानी कहने की कला में अपने को निपुण बनाये। यह सत्य है कि कहानी कहने वाले जन्मजात होते है उन्हें बनाया नहीं जा सकता। कुछ भी हो यदि अध्यापक कुछ आवश्यक बातों को ध्यान में रखकर कहानी कहने का अभ्यास करेंगे तो वह किसी सीमा तक सफलता प्राप्त कर सकता है।

कहानी कहने में जिन सावधानियों की आवश्यकता होती है उनका उल्लेख निम्न प्रकार से है।

1. कहानी सुनाने से पूर्व अध्यापक को कहानी में आने वाले घटनाओं का अध्ययन भली प्रकार से कर लेना चाहिए।

2. अध्यापक कहानी पुस्तक में से न पढ़े

बल्कि छात्रों का मौखिक रूप से सुनायें। पुस्तक से पढ़कर कहानी सुना देने से छात्रों पर प्रभाव नहीं पड़ता। अतः यथा संभव कहानी याद करके ही बालक को सुनायें।

③ अध्यापक को कहानी कहने की कला होनी चाहिए।

④ अध्यापक जिस कहानी को सुना रहा है वह छात्रों को रोचक रहे।

⑤ कहानी कहते समय अध्यापक को कहानी में ही लीन हो जाना चाहिए।

⑥ जिस समय अध्यापक कहानी को सुना रहा हो, उस समय अध्यापक को छात्रों की ओर ध्यान देना चाहिए। ऐसे करने से छात्रों की अवधान स्थिर तथा एकाग्र रहता है।

① कहानी रुचिपूर्वक पढ़ाये जाय। यह उसके शिक्षण का एक प्रमुख रूप है।

② प्रारंभिक कक्षाओं में कहानी संबंधी चित्र उपस्थित करके कहानी पढ़ायी जाय और चित्रों से संबंधित प्रेरक प्रश्न पूछे जाय।

(3) छात्रों को कहानी सुनाने के सुन्दर ढंग के बारे में भी परिचित करा देना आवश्यक है।

(4) छात्रों को प्रेरणा मिलनी चाहिए कि कहानी सुनकर वैसे ही कोई और कहानी वे सुनावे।

(5) कहानी के सन्दर्भ में पात्रों, भावों आदि का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। दो कहानियों की पारस्परिक तुलना भी उच्च कक्षाओं में प्रस्तुत करायी जा सकती है।

(6) कहानी कहने वाला कहानी को सरल और आकर्षक शैली में प्रस्तुत करें।

कहानी शिक्षण की उपयोगिता

---

(1) कहानी शिक्षण से बालक के मनोरंजन होता है। कहानियाँ मनोरंजन के साधन के रूप में विख्यात है।

(2) कहानी शिक्षण से छात्रों का ध्यान बढ़ता है। उसके साथ ही अनेक बालक को अज्ञात तथ्य कहानी के माध्यम से बताया जा सकता है। घटनाओं, व्यक्तियों, जानवरों आदि के गुण दोषों को कहानी के माध्यम से बालकों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है। (3) कहानी के माध्यम से बालकों में तर्क, कल्पना, विवेक आदि की वृद्धि होती है।

इस प्रकार कहानी ज्ञानवर्धन करती है।

(4) कहानी से बालकों की स्मरण शक्ति विकसित होती है।

(5) कहानी के माध्यम से वक्ता एवं श्रोता के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित होता है। (6) कहानी से साहित्य की अभिवृद्धि होती है।

नाटक [एकांकी शिक्षण]

प्राचीन काल से ही भारत में नाटक लिखे जा रहे हैं। नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। संस्कृत में नाटक को काव्य का अंग माना जाता है। काव्य के दो भेद हैं - श्रव्य और दृश्य। श्रव्य काव्य सिर्फ कानों से सुना जाता है। नाटक दृश्य एवं श्रव्य काव्य है जिससे कान और नेत्र को सुख मिलता है।

नाटक की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए नाट्याचार्य भरतमुनि के अनुसार - "किसी भी दशा के अनुकरण को नाटक कहते हैं।"

नाटक के सबसे सुन्दर परिभाषा अभिनव नाट्य शास्त्र में विद्वान भरत ने इन शब्दों में की है - "किसी प्रसिद्ध या कल्पित कथा के आधार पर नाट्य को द्वारा चित्र रचना के अनुसार - नाटककार द्वारा प्रशिक्षित नाटक जब रंगमंच पर संगीत एवं अभिनय ~~द्वारा~~ आदि के द्वारा ~~रस~~ रस उत्पन्न करके दर्शकों का मनोरंजन करता हुए उन्हें उपदेश तथा मानसिक शान्ति प्रदान करता है। तब उस क्रिया को नाटक कहते हैं।

नाटक शिक्षण के उद्देश्य

1) छात्रों का स्वस्थ मनोरंजन करना।
2) छात्रों को मानव स्वभाव एवं विभिन्न प्रकार के मानवीय चरित्रों से परिचित कराना।
3) संभाषण का अभ्यास कराना।

4) छात्रों में अनुकरण की मूल प्रवृत्ति का विकास करके अभिनंदन का अवसर प्रदान करना।

5) व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली भाषा एवं बोलने की शैली का विकास करना।

6) अभिनय कला की शिक्षा देना।

7) अंग संचालन, हाव-भाव, मुद्रा आदि द्वारा भावाभिव्यक्ति को विकसित करना।

8) छात्रों में निरीक्षण, कल्पना, बोध एवं विवेचन की क्षमता का विकास करना।

9) छात्रों को देश, काल एवं परिस्थिति के अनुकूल आचरण करने की शिक्षा प्रदान करना।

10) मानव प्रकृति एवं विभिन्न परिस्थितियों में किए गए आचरण को समझने की क्षमता प्रदान करना।

नाटक शिक्षण के महत्व

1) नाटक द्वारा प्रशिक्षण में रोचकता आती है। यदि विद्यार्थी हमेशा पुस्तक पढ़ते रहे और दिए गए प्रश्नों के उत्तर ही लिखते रहे तो कक्षा शिक्षण में नीरसता आ जाएगी। इसलिए कक्षा के शिक्षण को सरस बनाने के लिए यह आवश्यक है कि समय-समय पर कुछ परिवर्तन होते रहें। ये परिवर्तन नाटक नाटक शिक्षण के द्वारा सरलता से उत्पन्न किए जा सकते हैं।

2) नाटकों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए भाई योगेन्द्र जीत ने लिखा है - " नाटकों में मनुष्य जीवन की आवश्यकताओं और विषमताओं की चर्चा की जाती है। विद्यार्थी इन सबको

देखता है तथा सोचता है कि इन परिस्थितियों में कलाकारों ने कौन-कौन-सा कार्य किया। जिससे उन्हें सफलता प्राप्त हुई है। अब वह भी कैसी कर सकता है तथा उसके लिए कैसा संभव नहीं है कि वह परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढाल सके।

3) नाटकों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए Forbel ने लिखा है - "समस्त क्रियाएँ शिक्षाप्रद है। इनके द्वारा बच्चों की सूक्ष्मता को दूर करने में सहायता प्राप्त होती है। इससे तथ्यों को स्थूलता प्रदान की जाती है।

4) विद्यार्थियों में अनुकरण तथा क्रियाशीलता की प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती है। नाटक द्वारा इन प्रवृत्तियों का संतुष्टीकरण ही नहीं होता बल्कि उचित विकास ही होता है।

5) किसी भी घटना अथवा चरित्र को नाटक द्वारा सफलतापूर्वक समझाया जा सकता है।

6) नाटक के द्वारा विद्यार्थियों का बौद्धिक तथा मानसिक विकास होता है क्योंकि विद्यार्थियों को बहुत अधिक संवाद याद करने पड़ते है।

7) नाटक के द्वारा विद्यार्थियों को शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है। संवादों को सुनते हुए पता लगा जाता है कि परस्पर वार्तालाप किस प्रकार किया जा सकता है।

नाटक शिक्षण के संदर्भ में ध्यान रखने योग्य बातें

नाटक शिक्षण में निम्नलिखित बातों को ध्यान रखना चाहिए -

1. नाटक प्रारंभ करने से पूर्व नाटककार का परिचय छात्रों

9/4/2014 गद्य शिक्षण

गद्य शब्द ~~शब्द~~ संस्कृत की गद् धातु से बनाया। जिसका अर्थ है स्पष्ट कहना। ~~साहित्यिक~~ साहित्य की विभिन्न विधाओं में गद्य का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। गद्य में तथ्यों एवं विचारों को सर्वमान भाषा के माध्यम से ज्यों का त्यों प्रस्तुत ~~क~~ किया जाता है।

गद्य साहित्य की अनेक विधाएँ है। जैसे : निबंध, कहानी, नाटक, उपन्यास, जीवन चरित्र, संस्मरण, चित्रांकन, वर्णन, यात्रा, ~~उद्देश्य~~ दृश्य आदि का।

गद्य शिक्षण की सामान्य उद्देश्य

① विद्यार्थियों के शब्द - भण्डार का विकास करना।

② छात्रों के वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों के उच्चारण में शुद्धता उत्पन्न (प्रस्तुत) करना।

③ छात्रों में प्राप्त ज्ञान को प्रकाशित करने की योग्यता को विकसित करना।

④ विद्यार्थियों में भाषा से संबंधित ज्ञान वृद्धि करना।

⑤ छात्रों में स्पष्ट अर्थ समझने की शक्ति को विकसित करना।

⑥ छात्रों में कलापूर्ण ढंग से वाचन करने

की क्षमता विकसित करना।

(7) छात्रों में तर्क, विचार तथा कल्पना शक्ति का विकास करना।

(8) छात्रों में गति, लय, आरोह, अवरोह तथा विराम चिह्नों के साथ-साथ वाचन की क्षमता का विकास करना।

(9) छात्रों में सुनकर तथा पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न करना।

(10) छात्रों में बोलकर तथा लिखकर आत्माभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।

(11) मौन वाचन के द्वारा आत्मसात करने की क्षमता का विकास करना।

(12) अपरिचित शब्दों के अर्थ तथा उनके प्रयोग की क्षमता का विकास करना।

(13) लेखकों के मनोभावों को समझने की उपयोगिता का विस्तार करना।

16/4/2014

गद्य शिक्षण की मुख्य उद्देश्य

(1) मुख्य उद्देश्य पाठ के अनुसार परिवर्तित होती है। उदाहरण के लिए यदि पाठ विज्ञान से संबंधित है तब ऐसी दशा में गद्य शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न कराना होगा।

(2) मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए

एक विद्वान के अनुसार "किसी पाठ का मुख्य उद्देश्य जानने के लिए अध्यापक को सम्पूर्ण ~~पाठ~~ का पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए और जानना चाहिए कि यदा पाठ की विषय सामग्री बच्चों के किन संवेगों को जागृत कर सकती है। वह मानव जीवन के किस पहलूपर प्रकाश डालती है। और उससे बच्चों के चरित्र के किस अंग को प्रभावित किया जा सकता है।"

गद्य शिक्षण की महत्व

गद्य शिक्षण भाषा शिक्षण में सबसे महत्वपूर्ण है। गद्य शिक्षण की महत्व निम्नलिखित बातों से स्पष्ट होता है।

(1) विद्यार्थियों को गद्य शिक्षण की विभिन्न शैलियों का ज्ञान कराना।

(2) छात्रों की प्रतिभा को विकसित किया जा सकता है।

(3) छात्रों में शब्दकोश वृद्धि की जाती है।

(4) छात्र गद्य शिक्षण में क्रियाशील बनते है।

(5) गद्य शिक्षण के द्वारा छात्रों को पठन Reading

कला में योग्य बनाया जाता है।

⑤ गद्य शिक्षण द्वारा छात्रों की भावात्मक तथा सृजनात्मक शक्ति का विकास किया जाता है।

⑥ गद्य की पाठ पुस्तक

गद्य में प्रायः उन विषयों को लिया जाता है जिनका संबंध चिन्तन से होता है। वर्णन, तर्क, कहानी, व्याख्या, संस्मरण, तथा संवाद का शक्तिशाली माध्यम गद्य है। इसका कुछ भावात्मक भाग भी है। जिससे भावुकता की प्रधानता होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि पाठ्य पुस्तक का मुख्य उद्देश्य छात्रों में पढ़ने की योग्यता का विकास करना। जिससे वह भविष्य में विषय बोध करने एवं विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ हो सकते है।

गद्य : उद्देश्य, महत्व, पाठ्य पुस्तक, शिक्षण विधि

पाठ्य पुस्तक - तैयार करते समय सकारात्मक सोच समस्या अवसर, चिन्तन वर्णन, तर्क, कहानी → उद्देश्य मनोरंजन, नैतिकता, व्याख्या, रंगमंच, नाटक, संवाद। विषय Feelings काबु रखे।

(वाचन) पढ़ने के लिए प्रेरित हो।
विचारों की अभिव्यक्ति।

पढ़ने लिखने की क्षमता का विकास करना उच्च माध्यमिक कक्षाओं की प्रमुख गतिविधियाँ है। पठन कौशल के विकास के साथ लेखन कौशल भी ~~विकसित~~ होते चलता है। गद्य पाठ के द्वारा मौन वाचन के कौशल का विकास होता है। इसके साथ ~~अर्थ~~ अर्थ बोध शब्द भण्डार में वृद्धि तथा पठन गति शैली

9/6/2014
सोमवार

वास्तविक वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर

① वाक्य प्रयोग द्वारा

इसका अर्थ होता है कि नये शब्द

② प्रसंग कथन के द्वारा (उदाहरण, कहानी, द्वारा (Context)

③ विलोम शब्द द्वारा

④ संधि अथवा समास विच्छेद के द्वारा

पुनर्कथन → पुन:कथन

सदानन्द → सद + आनन्द

(प्रयोगात्मक)
⑤ व्याख्या द्वारा

कविता शिक्षण

कविता साहित्य का एक अंग है। कविता की एक निश्चित परिभाषा देना कठिन है परन्तु इतना कहा जा सकता है कि कविता आत्मा द्वारा भावों तथा विचारों का स्फुटन जो छन्द तथा नियमित गति से बंधी होने के कारण ताल और लय को अपने में समाविष्ट करती है। हिन्दी के अनेक विद्वानों ने अपने विचारानुसार कविता को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

पंडित जगन्नाथ के अनुसार - "रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम" सुन्दर अर्थ प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य कहलाता है।

प्रो रमण बिहारी के अनुसार, "मानव सौन्दर्य प्रिय प्राणी है। वह समाज में रहकर कुछ अनुभूति करता है तथा उसे प्रकट करता है। भिन्न भिन्न माध्यमों से जब वह अपनी अनुभूति को भाषा के माध्यम से जिस प्रकार अभिव्यक्त करता है कि उसमें सरलता तथा सरसता होती है। माधुर्य एवं ओज हो। और हृदय को स्पंदित करने की शक्ति हो। तो हम उसे कविता कहते हैं।"

जयशंकर प्रसाद के अनुसार - "पद्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है।"

कविता शिक्षण की विशेषताएँ

~~अनुभूति की~~ प्रधानता

कविता में कल्पना तथा अनुभूति की प्रमुखता होती है। सत्यम, शिवम, सुन्दरम की भावना

'सत्यम शिवम सुन्दरम' कविता के मुख्य उद्देश्य है। किन्तु कवि के सत्य कल्पना का भी मिश्रण होता है। जो कविता को सुन्दर बनाता है।

भाषा

कविता की भाषा सरल, सरस, मधुर तथा गाने योग्य होनी चाहिए।

संगीतात्मक

ताल लय तथा स्वरों के आरोह अवरोह के कारण ही कविता के भाव उबरकर आते है।

रसानुभूति

रस तथा काव्य दोनों परस्पर आधारित है। एक ~~स~~ के बिना दूसरा पक्ष कमजोर हो जाता है इसी कारण रस को काव्य की आत्मा ~~क~~ कहा है।

स्थायीत्व

उत्कृष्ट काव्य कृति सदैव स्थायी होती है।

विभिन्न स्तरों में कविता शिक्षण के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर

19/6/19 काव्य शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में सौन्दर्यानुभूति की भावना का विकास करना।
2. विद्यार्थियों में कवि के भावों विचारों तथा प्रतिपादन शैली का ज्ञान कराना।
3. विद्यार्थियों को काव्य के सही स्वरूप का ज्ञान कराना।
4. छात्रों में काव्य का भावार्थ ग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न कराना।
5. छात्रों का नैतिक तथा चारित्रिक विकास

कविता शिक्षण की विधियाँ या प्रणालियाँ (तरीका)

1. गीत प्रणाली

गीत प्रणाली का प्रयोग छोटी कक्षाओं की किया जाता है। छोटी कक्षाओं के बालकों को बालगीत अधिक प्रयोग होते है। अध्यापक सर्वप्रथम स्वर और लय के साथ पाठ का आलप करता है। तत्पश्चात विद्यार्थियों से लय ताल के साथ अनुकरण कराया जाता है।

२. अभिनय प्रणाली

बालगीतों में कुछ अभिनय प्रदान गीत होते हैं। वास्तव में प्रारंभिक स्तर पर अनेक गीत ऐसे पढ़ाने होते हैं जिनमें क्रियात्मकता का बाहुल्य होता है। ऐसे गीतों को अभिनय तथा नाट्य प्रणाली से पढ़ाना ही उचित होते हैं। इस प्रणाली द्वारा कक्षा का वातावरण सजग एवं सजीव बना रहता है तथा बच्चे आनन्दानुभूति करते हैं। यह प्रारंभिक स्तर तक ही सीमित रहती है।

21/8/14

3. अर्थ बोध प्रणाली

इस प्रणाली का प्रयोग शिक्षक करते कविता के आदर्श पाठ एवं अनुकरण पाठ कराने के उपरान्त शिक्षक स्वयं कविता का अर्थ बताता है। इस प्रणाली के अनुसार शिक्षक का आशय य एक एक पद करके समस्त कविता का अर्थ बालकों को बताना ही होता है।

समीक्षा प्रणाली

यह प्रणाली उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयोगी होती है। इस प्रणाली में कविता का यथार्थ मूल्यांकन किया जाता है। कवि की कल्पना उसमें प्रयोग किये गये अलंकार भाषा आदि को आलोचना के दृष्टि पर देखा जा सकता है। इस प्रणाली में अध्ययन का भार ज्यादा छात्रों पर लगता है।

शिक्षक छात्रों को मार्गदर्शन देता है। छात्र अपने प्रयास से कविता के समीक्षा करते है। यह प्रणाली छोटी कक्षाओं के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाती है।

व्याख्यान प्रणाली

इसमें अध्यापक कविता के अर्थ समझाने के साथ साथ प्रसंगिक कहानियों की व्याख्या करती है। अध्यापक बालकों के समक्ष कविता में आने वाले रस, अलंकार, दार्शनिक मत का स्पष्टीकरण करता है। वास्तव में इस प्रणाली द्वारा कवि भाव विद्यार्थियों के लेखन रचनात्मक भाव भावात्मक संबंधों की स्थापना की जाती है।

25/8/2014

व्याख्यान प्रणाली का प्रयोग करते समय ध्यान रखने योग्य बातें इस प्रकार है।

1. व्याख्या न आवश्यकता से अधिक हो न आवश्यकता से कम।
2. व्याख्या अत्यंत सरल तथा सुबोध भाषा में की जाय इससे विषय अत्यन्त सरल तथा बोधगम्य हो जाता है। (3) व्याख्या को प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापक को अपनी वाणी की भावों के अनुसार उदाहरण चढ़ाना चाहिए।
4. व्यर्थ की व्याख्या करना अनुचित है।
5. सरल अंशों की व्याख्या करने में समय व्यर्थ न किया जाय।
6. व्याख्या के समय छात्र छात्राओं को अपनी शंकाओं के समाधान का अवसर आवश्य देना चाहिए। (7) व्याख्या उपदेश का रूप न धारण

कर ली। उपदेश पूर्ण व्याख्या नीरस होती है।

व्यास प्रणाली

व्यास प्रणाली व्याख्या प्रणाली का बृहद् रूप है। इस प्रणाली में अध्यापक और अधिक विस्तार से भाव तथा शैली को स्पष्ट करने के लिए ~~कई~~ कथाओं उदाहरणों तथा दृष्टान्तों का ~~प्रयोग~~ करता है। कविता के भावों ~~की~~ के भावों की व्याख्या करने के अतिरिक्त कवि के दार्शनिक सिद्धान्तों का भी स्पष्टीकरण किया जाता है। व्यास प्रणाली का प्रयोग उच्च कक्षाओं के लिए ही होता है।

28/6/2014

तुलना प्रणाली

इस प्रणाली व्याख्या प्रणाली से मिलती जुलती है। ~~तुलना का तात्पर्य~~ उदाहरण के लिए सूर के वात्सल्य वर्णन की तुलना तुलसी के बालवर्णन से ~~की~~ की जा सकती है। तुलना का आशय एक कवि की रचना की तुलना ~~की~~ अन्य कवियों के रचना में करा कर कविता के मूल भाव को और अधिक समझने की शक्ति उत्पन्न करना होता है। यह तुलना अन्य भाषाओं के कवियों की ~~क~~ कविता से करा सकता है।

हिन्दी शिक्षण में सहायक सामग्री / दृश्य-श्रव्य सामग्री / साधन / उपकरण।

सहायक सामग्री का अर्थ

विषय स्पष्ट करने तथा उसे आकर्षक एवं रुचिकर बनाने है तो जटिल विषयों को सरलता बोधगम्य बनाने है तो जिस वस्तु का उपयोग किया जाता है वह सहायक सामग्री कहलाता है।

एम. वी. मूफात के अनुसार:-

"सहायक सामग्री अनुभव प्रदान करती है साधनी शब्द एवं वस्तु में संबन्ध स्थापित करती है। यह छात्र के समय में बचत करती है, सौन्दर्यात्मक ज्ञान का विकास एवं अभिवृद्धि करती है। मनमोहक मनोरंजन प्रदान करती है, कल्पना को उत्तेजित करती है, तथा छात्रों की निरीक्षण शक्ति का विकास करती है।"

सहायक सामग्री की आवश्यकता

1. सहायक सामग्री की सहायता से शैक्षिक क्रियाओं को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

2. प्रत्यक्ष ज्ञान के माध्यम से उत्तम शिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

3. सहायक सामग्री के माध्यम से छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास किया जा सकता है।

4. छात्र सीखी हुए बातों को देर तक स्मरण में रख सकते हैं।

5. सहायक सामग्री की सहायता से छात्र रुचि-पूर्वक एवं उत्साहपूर्वक सीखते है।

6. सहायक सामग्री की सहायता से कक्षा में छात्रों को सीखने में सरलता आ जाती है।

सहायक सामग्री का महत्व

भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री का अपना विशेष महत्व है। सहायक सामग्री के माध्यम से छात्रों का ध्यान पाठ्य विषय पर सरलता से केन्द्रित किया जा सकता है। इनके प्रयोग द्वारा शिक्षक पाठ को सजीव तथा सरल बना देता है। छात्र कक्षा में श्रोता मात्र न रहकर सक्रियता से विषय को समझ जाते है।

सहायक सामग्री के महत्व को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. सहायक सामग्री के प्रयोग द्वारा जटिल व अरुचिकर विषय को रोचक, सरल व स्पष्ट बनाया जा सकता है।
2. सहायक सामग्री की सहायता से शिक्षक एक साथ अनेक छात्रों की समस्याओं

का समाधान कर सकता है।

3. इनकी सहायता से छात्रों की ध्यान को एक बिन्दु पर केन्द्रित किया जा सकता है।

4. इनके द्वारा छोटी आयु के बालकों के ज्ञान को उन्नत बनाया जा सकता है।

5. इनके प्रयोग से छात्रों को विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को करने के अवसर प्राप्त होते हैं। इससे वे कठिन बातों को भी सफलतापूर्वक सीख लेते है। यह छात्रों की जिज्ञासा में वृद्धि करती है जिससे सीखने में प्रोत्साहन मिलता है।

6. इनकी सहायता से प्राप्त ज्ञान स्थायी व निश्चित बन जाता है।

7. विशेष रूप से मन्दबुद्धि बालकों को इनके माध्यम से सीखने से बहुत सहायता मिलती है।

दृश्य - श्रव्य साधनों के भेद/ प्रकार/वर्गीकरण

दृश्य - श्रव्य साधनों को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1) दृश्य साधन
2) श्रव्य साधन
3) दृश्य - श्रव्य साधन

1. दृश्य साधन

1. दृश्य का अर्थ ~~है~~ है देखने योग्य। जिन साधनों का संबन्ध केवल नेत्रों से है। ऐसे साधनों को दृश्य साधनों के रूप में देखना चाहता है।

2. जिन साधनों को हम अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप से देख सकते है ऐसे साधनों को दृश्य साधन कह सकते है। दृश्य साधन निम्नप्रकार से है

1. मौखिक :-

मौखिक साधन के द्वारा शिक्षक कहानी कहकर, उदाहरण देकर, अभिनय के द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली बना सकता है। किसी कठिन प्रश्न को सरल बनाने के लिए भी मौखिक साधन का सहारा लिया जा सकता है। मौखिक साधन का उपयोग उपयुक्त स्थल पर ही किया जा सकता है।

2. श्यामपट्ट (Black Board)

शैक्षिक दृष्टि से श्यामपट्ट को महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रत्येक विद्यालयों अथवा महाविद्यालयों में शिक्षक इसका उपयोग अवश्य करते है। श्यामपट्ट विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन को सुलभ बनाता है। श्यामपट्ट के माध्यम से ही शिक्षक अपने पाठ को रुचिपूर्ण बनाता है। सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार - "जिस प्रकार चित्रकार के लिए तूलिका और फलक

परम वांछनीय है। ठीक उसी प्रकार अथवा उससे भी अधिक शिक्षक के लिए श्यामपट्ट तथा चाटिया के टुकड़े का महत्व है। ये दोनों वस्तुएँ शिक्षक की सतर्क संगिनी है।"
(साथ-साथ चलने वाली क्रिया)

श्यामपट्ट के लाभ

1. शिक्षक श्यामपट्ट पर पाठ की मुख्य बातें ही लिखता है। अत: छात्रों को ज्ञात हो जाता है कि पाठ के मुख्य तत्व क्या है।

2. श्यामपट्ट द्वारा छात्रों का ध्यान पाठ विषय की ओर केन्द्रित किया जा सकता है।

3. श्यामपट्ट के प्रयोग से श्रवण तथा चक्षु दोनों इन्द्रियों का प्रयोग होता है।

4. भाषा शिक्षण में उच्चारण का अभ्यास श्यामपट्ट पर लिखकर ही किया जा सकता है।

5. इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र आदि विषयों में भी उसका महत्वपूर्ण स्थान है।

श्यामपट्ट के प्रकार:-

1. दीवार पर बनाये गये श्यामपट्ट

यह श्यामपट्ट काले रंग से दीवार के एक भाग पर बनाया जाता है। इसका प्रयोग केवल कक्षा में ही किया जाता है, बाहर नहीं।

23/9/2013

2. लकड़ी के श्यामपट्ट

शैक्षिक दृष्टि से इस श्यामपट्ट को भी महत्वपूर्ण माना है। इस श्यामपट्ट को कहीं भी उठाकर ले जाया जा सकता है।

3. लपेट फलक (Rolling black board)

इसका निर्माण मोटे कपड़े या रेगज़ीन के काले, नीले या हरे रंग से पोतकर किया जाता है। इसके नीचले तथा ऊपरी (हिस्सों) डण्डे किनारों पर दो गोल लकड़ी के अलग अलग सिलाई कर दिये जाते हैं।

इसे कील पर दीवार के सहारे टाँग कर काम में लाया जा सकता है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में इस फलक का इस्तेमाल किया जा सकता है।

श्यामपट्ट के संबन्ध में निम्न-लिखित बातों को विशेष ध्यान रखना चाहिए :-

1. श्यामपट्ट के आकार के अन्तर्गत उसकी चौड़ाई चार फुट होनी चाहिए तथा लम्बाई कक्षा के आकार के अनुसार छः से नौ फुट तक होनी चाहिए। यह फर्श से 26 से 39 इंच की दूरी पर छात्रों की ऊंचाई के अनुसार होनी चाहिए।
2. यह इस प्रकार बनाया जाना चाहिए कि कक्षा के समस्त छात्र इसपर लिखे गये तथ्यों को देख सकें तथा पढ़ सकें।
3. श्यामपट्ट पर ऊपर के बाये कोने से लिखना प्रारंभ करना चाहिए।
4. इसके रंग का विद्यार्थियों के आँखों पर बुरा प्रभाव न पड़े इसीलिए, श्यामपट्ट का रंग काला या हरा होना चाहिए।

5. इसे माह (मास) में एक बार अभी रंग से पोत देना चाहिए ताकि इस पर लिखे अक्षर स्पष्ट दिखाई देते रहे।

~~श्यामपट के संबंध में~~

6. अध्यापक को श्यामपट्ट पर सीधी पंक्तियों और स्पष्ट अक्षरों में लिखना चाहिए।

7. श्यामपट्ट पर लिखते समय शिक्षक को बाईं ओर थोड़ा तिरछा होकर खड़ा होना चाहिए। जिससे सभी छात्रों को श्यामपट्ट पर लिखे हुए अक्षर स्पष्ट दिखाई दे सके।

8. श्यामपट्ट पर लिखते समय तथा उसपर चित्र आदि बनाते समय मौखिक रूप से छात्रों को बताते रहना चाहिए।

9. श्यामपट्ट पर बड़े बड़े ~~अक्षरों~~ शब्दों में लिखना चाहिए जिससे कक्षा में पीछे बैठे छात्रों को दिखाई दे सकें।

10. श्यामपट्ट पर लिखते समय शिक्षक को बीच-बीच में पीछे मुड़कर भी देखते रहना चाहिए। जिससे छात्र आपस में बातचीत नहीं कर सकें।

3. चित्र :- (चित्र) (मूर्ति, प्रतिमा)

प्रत्येक वस्तु का प्रतिरूप नहीं बनाया जा सकता क्योंकि प्रतिरूप बनाने में अधिक धन और समय की आवश्यकता रहती है। इसलिए इनके स्थान पर चित्रों का उपयोग किया जाता है। शिक्षक किसी प्रकरण का नाम निकलने या पाठ्य वस्तु को सरल बनाने के लिए चित्रों को

प्रयोग कर सकते है। चित्र की सहायता से पाठ को रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है।

④ मानचित्र (नक्शा)

मानचित्र का प्रयोग प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं तथा भौगोलिक तथ्यों तथा स्थानों का अध्ययन करने के लिए परम आवश्यक है। मानचित्र बने बनाई बाजार में मिल जाते है परन्तु अच्छा यही है कि शिक्षक मानचित्र को स्वयं ही बनाये और उनमें केवल उन्हीं बातों को सुन्दर ढंग से अंकित करें जिनकी अतिआवश्यकता है।

⑤ चार्ट

भाषा शिक्षण में अनेक प्रकार के चार्ट बनाये जाते है जिसकी सहायता से छात्रों को शिक्षा प्रदान की जाती है। चार्ट अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं जैसे व्याकरण कार्य, रचना कार्य, भाषा कार्य, विलोम शब्द, वचन के सन्दर्भ में आदि।

उदाहरणार्थ ~~समय~~ समय चार्ट सहायक सामग्री में समय चार्ट का बहुत महत्व है। छात्रों को मात्र केवल तिथियों, वर्षों या आकड़ें को भी याद कर लेना पर्याप्त नहीं है बल्कि उसका अनुभव करना एवं समझना भी बहुत जरूरी है। इसमें छात्रों को विभिन्न घटनाओं के सम्बन्ध में यह बताना जरूरी है कि अमुक घटना आज

कितने समय पूर्व हुई और इन विभिन्न घट-
नाओं के मध्य कितना अन्तर रहा। यह सभी
समय चार्ट द्वारा ही दर्शाया जा सकता है।
जैसे समय चार्ट में एक ओर वर्ष और दूसरी
ओर घटनाएँ लिखी जानी चाहिए। उदाहरणार्थ
हिन्दी शिक्षण में महात्मा गाँधी के सन्दर्भ में
विभिन्न घटनाएँ समय चार्ट के माध्यम से
दर्शायी जा सकती है।

समय चार्ट

1869 – महात्मा गाँधी का जन्म।
1883 – कस्तूरबा से विवाह,
1888 - इंग्लैंड को रवाना।
1908 – दक्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह।
1915 – दक्षिण अफ्रिका से भारत लौटे।
1919 – जालियनवाला बाग
1920 – असहयोग आन्दोलन
1921 – भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष
1930 – सविनय अवज्ञा आन्दोलन
1942 – भारत छोड़ो आन्दोलन
1944 - कस्तूरबा की मृत्यु
1947 – भारत स्वतंत्र
1948 – मृत्यु (दिल्ली में हत्या)

⑥ प्रतिमूर्ति (model) (प्रतिमा)

9/3/14

~~प्रतिमूर्ति~~ छात्र प्रत्यक्ष ज्ञान से अच्छी तरह से सीखते हैं लेकिन यह भी संभव नहीं है कि प्रत्येक वास्तविक पदार्थ के पास छात्रों को ले जाकर उसका ज्ञान कराया जाय ऐसी स्थिति में अच्छा यह हो कि यदि उस पाठ्य वस्तु का मोडल या प्रतिमूर्ति के रूप में बालकों के सामने पेश करे। उदाहरणार्थ ताजमहल, अकबर आदि का मोडल।

मोडल के सन्दर्भ में ध्यान रखने योग्य बातें

① बालकों को मोडल निर्माण करने का ज्ञान भी देना चाहिए।

② मोडल दिखाते समय उस मोडल की जानकारी से छात्रों को अवगत कराया जाय।

③ मोडल का रूप सुन्दर तथा आकर्षक होना चाहिए।

④ मोडल बडा होना चाहिए जिसे कि कक्षा के सभी छात्र आसानी से देख सकें।

⑤

⑦ मूकचित्र

इन चित्रों को दिखाते समय ध्वनि का प्रयोग नहीं किया जाए। चलचित्रों के इतिहास का यदि हम पता लगायें तो (मालूम) होगा कि पहले मूकचित्र ही बना विदित होगा।

करती है भी जिनमें ध्वनि नहीं होती है थी मातृभाषा का शिक्षक रचना शिक्षण में इन मूकचित्रों का प्रयोग कर सकता है। उदाहरणार्थ प्राकृतिक दृश्य, कश्मीर की घटनाओं का प्रदर्शन आदि।

(8) चित्रदर्शन (Projector)

सहायक सामग्री में Projector का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी शिक्षण में विभिन्न प्रकरणों पर छोटी-छोटी फिल्म Slides पर बनाई जा सकती है। रचना शिक्षण में चित्र वर्णन का पाठ इनकी सहायता से बड़ी सफलतापूर्वक चल सकता है। किसी भी चित्र को दिखाने के पश्चात मौखिक रूप से उसपर आधारित प्रश्न पूछकर पाठ का विकास किया जा सकता है।

Projector को दिखाने के लिए कमरे को बन्द करके कमरे में अन्धेरा करके परदे पर रोशनी डाली जाती है। Projector की सहायता से पाठ के अंश को छात्रों के समक्ष सजीव रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

(9) चित्र विस्तारक यंत्र C

चित्र विस्तारक यंत्र बिना Slides के छपी आकृति, मानचित्र, पुस्तक के

पृष्ठ, चित्र आदि दिखाये जा सकते है। छात्रों को बड़ी आकृति में ये चीजें आकर्षक दिखाई देती है इससे उसे सरल ज्ञान की प्राप्ति होती है।

10/3/19 (3) श्रव्य - साधन

अर्थ: ① श्रव्य साधनों का संबंध श्रवण इन्द्रिय से है। इन्हें श्रवण करके छात्र ज्ञान प्राप्त करते है।

② श्रव्य साधनों का अर्थ इस प्रकार लगाया जा सकता है कि जिन साधनों को हम अपने कानों से केवल सुनने का प्रयत्न करते है। इस साधनों को श्रव्य साधन कह सकते है। ये साधन निम्नलिखित प्रकार से है।

① ग्रामोफोन

हिन्दी शिक्षण में ग्रामोफोन का महत्व पूर्ण स्थान है ग्रामोफोन की सहायता से बालकों में जो वाचन संबंधी उच्चारण दोष होते हैं उन्हीं दोषों का निराकरण ग्रामोफोन की सहायता से किया जा सकता है। बालकों के शुद्ध उच्चारण में यह सहायक ~~सिद्ध~~ होता है। पाठों का रिकार्ड तैयार करके कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करने से छात्रों को अत्यधिक ~~प्रभाव~~ लाभ होने की संभावना रहती है ~~नाटकीय~~ नाटकीय संवाद, कविता, पाठ एवं भाषण भी इन रिकार्ड के द्वारा लिखवाये जा सकते है। ~~के छात्र~~

② रेडियो

यह मनोरंजन के साधनों में से एक लोकप्रिय साधन है। रेडियो के माध्यम से अब छात्रों के लिए भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये जा रहे हैं। व्याकरण, उच्चारण, कविता, गद्य आदि कार्यक्रम रेडियो के द्वारा प्रस्तुत किये जा रहे हैं। वर्तमान स्थिति में ही कवियों आलोचकों तथा अन्य साहित्यकारों के भी कार्यक्रम रेडियो पर प्रस्तुत होने लगे हैं। समाचार, घटनाओं, व्याख्यानों तथा विद्वानों के विचार छात्र रेडियो पर सुनते हैं।

③ टेपरिकॉर्डर

श्रव्य साधन में टेपरिकॉर्डर एक महत्वपूर्ण साधन है। टेपरिकॉर्डर के अन्दर कोई भी व्यक्ति अपने ध्वनि को भरकर पुनः सुन सकता है। टेपरिकॉर्डर का प्रयोग जहाँ एक और महापुरुषों के प्रवचन नेताओं के भाषण तथा प्रसिद्ध कलाकारों की कविताएँ, संगीत आदि सुनाने में किया जाता है।

दूसरी ओर बालक तथा शिक्षक भी अपनी ध्वनि को भरकर पुनः सुन सकते हैं। इससे बालकों की बोलने की गति तथा स्वर संबंधी सभी त्रुटियों एवं उच्चारणों को सुधारने में आश्चर्यजनक सहायता मिलती है। एक बार रिकॉर्ड करने के बाद सैकड़ों हजारों

बार के लिए यह स्थायी हो जाता है।
विद्यालयों में हिन्दी एवं अन्य विषयों के
शिक्षक के लिए टेपरिकार्डर बड़ा उपयोगी है।

~~① महात्मा गांधी~~

②

1. प्रकृतिवाद
2. प्रयोगवाद
3. सामाजिक परिवर्तन
4. शिक्षा तथा अर्थशास्त्र
5. बुद्ध, शंकर, विवेका, महात्मा, रवीन्द्रनाथ
6. प्लेटो, ~~[illegible]~~, फ्रोबेल, हरबर्ट स्पेंसर, जॉन लॉक. हरबर्ट, जॉन डीवी.

मोन्टेसरी